सिटी चीफ

वर्ष-15, अंक-59
पृष्ठ-8 मूल्य 2 रूपया

सम्पूर्ण भारत मे चर्चित हिन्दी अखबार

इंदौर, बुधवार,05 जून 2024

CITYCHIEFSENDMENEWS@GMAIL.COM

आज का विचार

शरीर को रोगी और निर्बल रखने के सामान दूसरा कोई पाप नहीं है।
- लोकमान्य तिलक

दिल्ली आ रहे बड़े नेता, क्या हुआ जब विमान में हुई नीतीश-तेजस्वी की मुलाकात

लोकसभा चुनाव परिणाम आने बाद केंद्र में नई सरकार के गठन की तैयारियां शुरू हो गई हैं। आज दिल्ली में मोदी कैबिनेट की आखिरी बैठक होगी। इसके बाद पीएम आवास पर ह्ष्ठ घटक दलों की बैठक होगी, जिसमें नई सरकार के गठन में मंथन किया जाएगा। पटना से दिल्ली आने वाली फ्लाइट में नीतीश कुमार और तेजस्वी यादव की मुलाकात हुई। नीतीश जब अपनी सीट पर पहुंचे, तो पीछे वाली सीट पर तेजस्वी पहले से बैठे हुए थे। नीतीश को देखकर तेजस्वी खड़े हुए और नमस्कार किया। नीतीश ने भी नमस्कार किया और पैर की चोट के बारे में पूछा। इसके बाद नीतीश भी अपनी सीट पर बैठ गए। मीडिया ने प्रतिक्रिया चाही, तो दोनों नेताओं ने हाथ जोड़ते हुए इनकार कर दिया। भाजपा खेमे से खबर है कि नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू से समर्थन की चिट्ठी मिलने

के बाद ही भाजपा सरकार बनाने का दावा पेश करेगी। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू आज मोदी सरकार 2.0 को विदाई देंगी। इसके लिए भोज का आयोजन किया गया है। बता दें, लोकसभा चुनाव 2024 में किसी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला है। 241 सीट जीतकर भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनी है। हालांकि वह लोकसभा की कुल 543 सीटों में से बहुमत के लायक 272 सीट से पीछे है। एनडीए के घटक दलों को मिला लिया जाए तो कुल संख्या 294 हो रही है। यानी बहुमत से 22 ज्यादा। वहीं विपक्ष दलों के गठबंधन आइएनडीआइए को 232 सीटें मिली हैं। वहां भी सरकार बनाने की संभावनाएं टटौली जा रही हैं। आइएनडीआइए गठबंधन के नेताओं का मानना है कि यदि नीतीश कुमार और चंद्रबाबू नायडू पाला बदल लेते हैं, तो मोदी को तीसरी बार पीएम बनने से रोका जा सकता है।

तेजस्वी यादव बोले- सरकार बनाने की कोशिश करेंगे, क्या महाराष्ट्र में फिर होगा बड़ा खेला

लोकसभा चुनाव में भले ही भाजपा समेत किसी दल को स्पष्ट बहुमत नहीं मिला हो, लेकिन कोई पक्ष सरकार बनाने की कवायद में जुट गए हैं। आइएनडीआइए में भी आवाज उठ रही है कि विपक्ष को सरकार बनाने की कोशिश करना चाहिए।इसी क्रम में बुधवार को दिल्ली में कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे के निवास पर अहम बैठक होने जा रही है। बैठक में कांग्रेस के बड़े नेताओं के साथ ही शरद पवार, अखिलेश यादव, उद्धव ठाकरे, तेजस्वी यादव मौजूद रहेंगे। ममता बनर्जी नहीं आ रही हैं, लेकिन उनके स्थान पर भतीजे और सांसद अभिषेक बनर्जी मौजूद रहेंगे। पटना से नई दिल्ली के लिए रवाना होने से पहले तेजस्वी यादव ने कहा कि आइएनडीआइए गठबंधन सरकार बनाने का प्रयास करेगा। क्या महाराष्ट्र में उद्धव ठाकरे करेंगे बड़ा खेला महाराष्ट्र से खबर है कि यहां उद्धव ठाकरे बड़ा खेल कर सकते हैं। शिंदे गुट के 7 सांसद जीतकर आए हैं। इनमें से कुछ के उद्धव ठाकरे से सम्पर्क होने की आशंका है।

संजय राउत बोले - हमारे पास सरकार बनाने का जनादेश
शिवसेना यूबीटी नेता संजय राउत ने कहा, भाजपा को बहुमत नहीं मिला है। उन्हें लगभग 235-240 सीटें मिली हैं। वे मोदी की सरकार लाने की बात कर रहे थे। कहां है मोदी सरकार? चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार की बैसाखी से अगर एनडीए सरकार बनी, तो वह कभी भी गिर सकती है। बीजेपी ने अपना सम्मान खो दिया है। हमें ऐसा प्रधानमंत्री नहीं चाहिए जिसने अपना सम्मान खो दिया हो। मोदी ब्रांड खत्म हो गया है। बीजेपी ने जो सीटें जीती हैं, वे सभी ईडी, सीबीआई और आईटी के कारण जीती हैं। अगर वे सरकार बनाने जा रहे हैं तो उन्हें बनने दीजिए। हम इसका स्वागत करते हैं, क्योंकि यह एक लोकतंत्र है। उन्हें सरकार बनाने का अधिकार है, लेकिन फिर भी हमारे पास आवश्यक संख्या है। लोगों ने हमें 250 सीटें दी हैं और हमारे पास सरकार बनाने का जनादेश है। अगर चंद्रबाबू नायडू और नीतीश कुमार तय करते हैं कि वे एक तानाशाह का समर्थन नहीं करना चाहते हैं और लोकतंत्र के साथ खड़े होना चाहते हैं, तो क्या होगा क्या वे ऐसा करेंगे?

जबलपुर के भेड़ाघाट स्टेशन पर रेल कर्मचारी ने पत्नी और दो बेटियों के साथ ट्रेन के सामने कूदकर दी जान

जबलपुर । भेड़ाघाट स्टेशन में ट्रेन से कटकर एक परिवार ने जान दे दी। मौत की वजह घरेलू कलह बताई जाती है। परिवार जबलपुर के सिहोरा का रहने वाला था। नरेश चंद्राकार ने पत?नी बच?चे समेत मौत को गले लगा लिया। परिवार में दुधमुंही समेत दो बेटियां थीं। नरेश रेलवे में ही ग्रुप डी में कर्मचारी था। जीआरपी और भेड़ाघाट थाने की पुलिस मौके पर है।नरेंद्र चढ़ार (32 वर्ष) रेलवे में ग्रुप - डी कर्मचारी थे। पत्नी रीना चढ़ार (26) के साथ उन्होंने बेटी सानवी (6) और मानवी (3 महीने) के साथ आत्महत्या कर ली। बताया जा रहा है कि पारिवारिक विवाद में रेलकर्मी ने यह कदम उठाया है। जीआरपी और भेड़ाघाट थाने की पुलिस मौके पर है।

धर्मधानी उज्जैन में भगवा ध्वज ने छुआ आसमान...

उज्जैन। महाकाल की नगरी और प्रदेश की धर्मधानी उज्जैन में एक बार फिर भगवा परचम ने आकाश छुआ। लोकसभा चुनाव में भाजपा प्रत्याशी अनिल फिरोजिया ने रिकार्ड जीत दर्ज की है। निकटतम प्रतिद्वंद्वी कांग्रेस के महेश परमार को 4 लाख से अधिक वोटो से हरा दिया। यह नया रिकार्ड है। इससे पहले 2019 में फिरोजिया ने ही कांग्रेस प्रत्याशी बाबूलाल मालवीय को तीन लाख 65 हजार 637 वोटों से हराया था।मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव का गृह क्षेत्र होने से भी यह सीट चर्चा में थी। साथ ही अक्टूबर-2022 में श्री महाकाल महालोक के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी द्वारा लोकार्पण किए जाने के बाद भाजपा ने इस अपनी बड़ी उपलब्धि बताया था। इन सब समीकरणों के बीच यह क्षेत्र भाजपा के लिए प्रतिष्ठा का विषय बन गया था। रिकार्ड जीत से एक बार फिर उज्जैन-आलोट संसदीय क्षेत्र भाजपा का मजबूत गढ़ साबित हुआ है। उल्लेखनीय है कि उज्जैन-आलोट संसदीय क्षेत्र में 1951 से लेकर 2019 तक हुए 17 चुनावों में केवल पांच बार कांग्रेस जीती है। इस सीट को भाजपा का मजबूत किला माना जाता रहा है। इस बार भी शुरुआती दौर में यहां चुनाव एकतरफा ही माना जा रहा था। इसके बाद कुछ रोचक राजनीतिक समीकरण देखने को मिले। पहला यह कि भाजपा ने प्रत्याशियों की अपनी पहली सूची में उज्जैन सीट को होल्ड पर रखा। दूसरा रोचक पहलू कांग्रेस का दिखा। कांग्रेस ने यहां मनोवैज्ञानिक चाल चलते हुए तराना से विधायक महेश परमार को मैदान में उतारा। दरअसल, महेश परमार 2018 में हुए विधानसभा चुनाव में अनिल फिरोजिया को हरा चुके थे। इसके अलावा नगर निगम के महापौर चुनाव में भी परमार ने भाजपा प्रत्याशी को कड़ी टक्कर दी थी। इन्हीं सब समीकरणों को देखते हुए परमार कांग्रेस के लिए मुफीद उम्मीदवार बन गए। दोनों ही प्रमुख राजनीतिक दलों द्वारा प्रत्याशियों की घोषणा के बाद मुकाबला रोचक हो गया। कांग्रेस ने शिप्रा शुद्धीकरण, महाकाल मंदिर की अव्यवस्थाएं जैसे स्थानीय मुद्दों को उठाया। शिप्रा नदी में गंदा पानी मिला तो कांग्रेस प्रत्याशी ने डुबकी लगा ली। मुख्यमंत्री डा. यादव ने शिप्रा नदी में उतरकर यहां तक कहा कि बहुत दुख होता कि लोग शिप्रा मैया को लेकर सवाल उठाते हैं। भाजपा ने संगठन के नियमों के अनुसार बूथ स्तर पर मजबूत जमावट जमाई, प्रत्याशी फिरोजिया ने ग्रामीण क्षेत्रों में खूब जनसंपर्क किया, राम मंदिर, मोदी की गारंटी, देश के विकास जैसे मुद्दे जनता के बीच लेकर गए। प्रधानमंत्री के रूप में नरेन्द्र मोदी को ही जनता चुनना तय कर चुकी थी, इसलिए यहां पार्टी को प्रचंड जीत मिली। महेश परमार मजबूत उम्मीदवार थे, मगर संगठन स्तर पर पार्टी बहुत कमजोर साबित हुई। बूथ स्तर पर कोई प्रबंधन नहीं था।

नरेन्द्र मोदी की राम-राम घरों तक पहुंची, लोकल कनेक्ट से भाजपा जीती

धार। धार-महू लोकसभा के साथ रतलाम-झाबुआ और खरगोन-बड़वानी लोकसभा सीटों में जीत के लिए कांग्रेस और भाजपा ने पूरी ताकत झोंकी। भीषण गर्मी ने पसीना बहाया। इसमें प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का राष्ट्रीय और लोकल कनेक्ट का जादू चल गया। सात मई को भीषण गर्मी में प्रधानमंत्री ने खरगोन और धार में सभा कर चार संसदीय क्षेत्र पर फोकस किया।धार में तो उन्होंने भोजशाला और मांडू का जिक्र कर स्थानीय कनेक्ट ऐसा बनाया कि 13 मई तक मोदी की राम-राम घर-घर तक पहुंच गई। खरगोन में आदिवासी मतदाताओं से-वारलूं छे और मां नर्मदा के माध्यम से जुड़े थे, वहीं कांग्रेस के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष राहुल गांधी की आदिवासी और आरक्षण की बात असरकारी नहीं रही। छह माह पहले मालवा-निमाड़ में विधानसभा चुनाव के प्रदर्शन से भाजपा के प्रदेश और राष्ट्रीय नेतृत्व को चिंता थी, इसलिए प्रधानमंत्री फरवरी में जब इलेक्शन मोड में आए तो उन्होंने सबसे पहले आदिवासी वोटरों को साधने के लिए झाबुआ में अपनी सभा की। हालांकि तब चुनावी कार्यक्रम घोषित नहीं हुआ था। मोदी ने इस जीत की आधारशिला रख दी थी। उसके बाद राहुल गांधी ने भी अपने वोट बैंक को बनाए रखने के लिए धार जिले के बदनावर व रतलाम में भारत जोड़ो अभियान के तहत बड़ी सभा की। यहां पर अपने सभी कांग्रेसी विधायकों को एक जाजम पर बैठाया और जीत के लिए मंत्र भी दिया। इस तरह से दोनों ही राजनीतिक दल मालवा-निमाड़ के इन लोकसभा क्षेत्रों में चुनाव कार्यक्रम के पहले ही कमर कस चुके थे। आचार संहिता लागू हुई और चुनावी सरगर्मी में दोनों पार्टी को फिर इस क्षेत्र की याद आई। प्रधानमंत्री वैसे तो अप्रैल में ही धार आने वाले थे। भाजपा ने समय की नजाकत को ध्यान में रखकर चुनाव के एक सप्ताह पहले प्रधानमंत्री की सभा करवाई। सात मई को धार और खरगोन में सभा हुई। इन सभा में मोदी ने राष्ट्रीय मुद्दों को जनता के सामने रखा लेकिन वे लोकल कनेक्ट पर ज्याद केंद्रित थे। धार में डा. आंबेडकर का जिक्र करना नहीं भूले, वहीं धार में भोजशाला शब्द बोलकर ही वे भाजपा के लिए जीत के अंतर का बड़ा सेतु बना गए थे। निमाड़ में भी मां नर्मदा के माध्यम से स्थानीयता को स्पर्श किया, वहीं घर-घर तक मोदी की राम-राम पहुंचे लगी। 13 मई को यह राम-राम वोट में तब्दील हो गई और आज नतीजा सामने है।

लोकसभा चुनाव में बाहरियों को मतदाताओं ने दिखाया बाहर का रास्ता....

रायपुर। लोकसभा चुनाव के दौरान प्रत्याशियों के स्थानीय और बाहरी होने का मुद्दा छाया रहा। सबसे पहले यह आवाज कोरबा से उठी, जब भाजपा की नेत्री सरोज पांडेय को दुर्ग की जगह कोरबा से चुनावी मैदान में उतारा गया।इस बीच कांग्रेस ने भी दुर्ग के कद्दावर नेताओं को सामाजिक समीकरण साधने के लिए दूसरे लोकसभा क्षेत्रों में उतार दिया था। ऐसे में भाजपा-कांग्रेस दोनों ही दलों के प्रयोग को मतदाताओं ने स्वीकार नहीं किया और बाहर का रास्ता दिखा दिया। भाजपा नेत्री सरोज पांडेय कोरबा से हार गईं और इसी

तरह कांग्रेस के चार नेताओं में पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल, पूर्व गृह मंत्री ताम्रध्वज साहू, पूर्व मंत्री डा. शिव डहरिया और विधायक देवेंद्र सिंह यादव को हार का सामना करना पड़ा। राजनीतिक प्रेक्षकों के अनुसार जातिगत समीकरण साधने और बड़े नेताओं को प्रत्याशी बनाने की रणनीति में कांग्रेस ने लगभग सभी प्रत्याशियों के क्षेत्र बदल दिए थे। इनमें दुर्ग के नेता व पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल को राजनांदगांव, दुर्ग के पूर्व सांसद रहे ताम्रध्वज साहू को महासमुंद, रायपुर संभाग के पूर्व मंत्री डा. शिव डहरिया को जांजगीर-चांपा और दुर्ग-भिलाई के निवासी विधायक देवेंद्र यादव को बिलासपुर से चुनावी मैदान में उतारा गया था। इन नेताओं को मतदाताओं ने हार का रास्ता दिखाया।

लोकसभा चुनाव में करारी हार के बाद मुस्लिम समाज से नाराज हुईं मायावती, कह दी ये बड़ी बात

दिल्ली। मायावती ने कहा, इस लोकसभा चुनाव में और पिछले चुनावों में भी मुसलमानों को पर्याप्त प्रतिनिधित्व दिया, लेकिन हमें पर्याप्त समर्थन नहीं मिला और वे हमें ठीक से समझ नहीं पाए। इसलिए अब से हम सोच-समझकर ही उन्हें मौका देंगे, ताकि पार्टी को ऐसा नुकसान न हो।

चुनाव में हार क बाद मायावती ने प्रतक्रियि देते हुए कहा, जैसा कि सर्वविदित है कि देश में 18वीं लोकसभा के लिए सात चरणों में हुआ आमचुनाव अब लगभग ढाई महीने के लम्बे समय के बाद, आज चुनाव परिणाम के साथ अपने समापन पर है जबकि हमारी पार्टी चुनाव आयोग से शुरू से ही यह माँग करती रही है कि चुनाव बहुत लम्बा नहीं खिंचना चाहिए, बल्कि आम लोगों के हितों के साथ-साथ, चुनाव ड्यूटी में लगने वाले लाखों सरकारी कर्मचारियों तथा सुरक्षाकर्मियों आदि के व्यापक हित व सुरक्षा आदि को ध्यान में रखते हुए यह चुनाव अधिक से अधिक तीन या चार चरणों में ही कराया जाना चाहिए था। किन्तु ऐसा न होने पर लोकसभा का यह चुनाव लगभग पूरे समय ख़ासकर ज़ोरदार गर्मी की तपिश से जनजीवन के अस्त-व्यस्त होने के कारण काफी ज्यादा प्रभावित रहा है। विशेषकर ग़रीब तबकों व अन्य मेहनतकश लोगों के चुनावी उत्साह में भी काफी कुछ फर्क पड़ने के कारण, उम्मीद के विपरीत, वोट प्रतिशत भी काफी प्रभावित हुआ है। जो चिन्ता का प्रमुख कारण बना रहा और यह लगातार मीडिया की सुर्खियों में भी रहा। ऐसे में यह उम्मीद की जाती है कि लोकतंत्र व आमजन के व्यापक हित के मद्देनज़र, आगे चुनाव कराते समय चुनाव आयोग द्वारा लोगों की इन ख़ास परेशानियों को ज़रूर ध्यान में रखा जाएगा। इसके अलावा, चुनाव के दौरान देश भर में लगभग पूरे समय मंहगाई, गरीबी व बेरोजगारी आदि से त्रस्त लोगों में यह आम चर्चा रही कि यदि चुनाव फ्री एण्ड फेयर हुआ व ईवीएम में कोई गड़बड़ी

आदि नहीं हुई तो फिर चुनाव परिणाम निश्चय ही, ख़ासकर रूलिंग पार्टी के नेताओं के दावों के अनुसार नहीं होकर, चौंकाने वाला ज़रूर होगा। और आज जब लोकसभा चुनाव का जो भी व जैसा भी नतीजा आया है वह लोगों के सामने है, और उन्हें ही, अब देश के लोकतंत्र, संविधान व देशहित आदि के बारे में सोचना और फैसला करना है कि यह जो चुनाव परिणाम आया है उसका आगे उन सबके जीवन पर क्या फर्क (असर) पड़ने वाला है तथा उनका अपना भविष्य कितना शान्त, व सुरक्षित रह पाएगा? इसके अलावा, इस चुनाव में ख़ासकर यूपी की तरफ पूरे देश की निगाहें टिकी हुई थीं और यहाँ भी जो परिणाम सामने आया है वह भी जनता के सामने है। हमारी पार्टी इसको गंभीरता से लेकर इसका हर स्तर पर गहराई से सही विश्लेषण करेगी और पार्टी व मूवमेन्ट के हित में जो भी ज़रूरी होगा तो उसको लेकर ठोस कदम भी उठाएगी क्योंकि बी.एस.पी. एक राजनीतिक पार्टी के साथ-साथ लोगों के आत्मङ्कसम्मान व स्वाभिमान का एक मूवमेन्ट भी है। इसीलिए हमारी प्रतिक्रिया भी विशुद्ध रूप से देश के लोकतंत्र व परमपूज्य बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर के संविधान की पवित्रता व मजबूती को समर्पित होगी, ताकि देश के करोड़ों गरीबों, शोषितों, दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों एवं मुस्लिम व अन्य धार्मिक अल्पसंख्यकों के हित व कल्याण तथा उनकी सुरक्षा एवं सम्मान आदि पर मंडराता ख़तरा दूर हो। इसका सबसे मूल व प्रभावी रास्ता स्वंय बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर ने यह बताया है कि सत्ता की मास्टर चाबी प्राप्त करके ही तरक्की के तमाम बंद दरवाज़े खोले जा सकते हैं, जिसके प्रति अपने संघर्ष, त्याग व बलिदान का खुद ऑकलन करते रहना बहुत ज़रूरी है, तभी भविष्य संवरेगा व सुधरेगा भी। और अब मेरा यही कहना है कि परमपूज्य बाबा साहेब डा. भीमराव अम्बेडकर के बताए रास्तों पर चलकर पूरी लगन, निष्ठा व ईमानदारी के साथ मेहनत से कार्य करना ही अपना मिशनरी धर्म है । हमारी इसी सोच व शक्ति ने सदियों से शोषित व उपेक्षितों को आत्म-सम्मान एवं स्वाभिमान के साथ जीने के लिए संघर्ष करते रहना सिखाया है और सरकार बनने पर 'सामाजिक परिवर्तन व आर्थिक तरक्की% के तहत् उनके जीवन को काफी हद तक बदला भी है । इसीलिए इनको अपना भविष्य संवार कर देशहित को बढ़ावा देने का मिशनरी काम बिना थके, रुके व हारे अर्थात् हर हाल में पूरी तत्परता के साथ लगातार जारी रखना है तब फिर बेहतर जीवन का रास्ता ज़रूर निकलेगा। और अब अन्त में मेरा यही कहना है कि इस बार चुनाव में अपनी पार्टी बी.एस.पी. का अकेले ही, पार्टी से जुडे लोगों के बलबूते पर बेहत्तर रिज़ल्ट के लिए जो हर सम्भव पूरा-पूरा प्रयास किया गया है जिसमें खासकर दलित वर्ग में से मेरी खुद की जाति के लोगों ने अधिकांश अपना वोट बी.एस.पी. को देकर जो अपनी अहम् मिशनरी भूमिका निभाई है। तो उनका भी मैं विशेषकर पूरे तेहदिल से आभार प्रकट करती हूँ। साथ ही बहुजन समाज पार्टी का खास अंग मुस्लिम समाज जो पिछले कई चुनावों में व इस बार भी लोकसभा आमचुनाव में उचित प्रतिनिधित्व देने के बावजूद भी बी.एस.पी. को ठीक से नहीं समझ पा रहा है तो अब ऐसी स्थिति में आगे इनको काफी सोच समझ के ही चुनाव में पार्टी द्वारा मौका दिया जायेगा।

सिंगल कॉलम

14 वर्षीय बालिका से दुष्कर्म करने वाले सौतेले पिता को 20 वर्ष का कठोर कारावास

इंदौर। 14 वर्षीय बालिका से दुष्कर्म करने वाले सौतेले पिता को विशेष न्यायालय ने 20 वर्ष कठोर कारावास की सजा सुनाई। कोर्ट ने दुष्कर्मी पर 59 हजार रुपये अर्थदंड भी लगाया है। दुष्कर्मी बालिका पर धर्म परिवर्तन के लिए भी दबाव बनाता था।बच्ची ने कहा मां के पास अच्छा नहीं लगता

उसने बताया कि उसके बेटे-बहू वर्ष 2008 में अलग-अलग हो गए थे। दो वर्ष से उसकी बहू आजाद नगर क्षेत्र में एक मुस्लिम युवक के साथ निकाह करके अपने दोनों बेटियों के साथ रह रही है। 8 दिसंबर 2022 को उसकी पोती उसके घर आई और बोली कि मुझे मम्मी के पास अच्छा नहीं लगता है। मैं आपके साथ रहूंगी। इसके बाद से बालिका उसके साथ है। यह बालिका उदास रहती थी। दादी ने बालिका से इसकी वजह पूछी तो उसने बताया कि 6 दिसंबर 2022 को दोपहर में वह घर पर अकेली थी। इस दौरान उसका सौतेला पिता आया और उसके साथ गलत काम किया। इसके थोड़ी देर बाद पास में रहने वाला एक नाबालिग भी आया और उसके साथ दुष्कर्म किया। कुछ देर बाद सौतेला पिता और नाबालिग आए और कहा कि यह बात किसी को बताई तो जान से खत्म कर देंगे। बालिका ने यह भी बताया कि उसका सौतेला पिता उस पर धर्म परिवर्तन करने के लिए भी दबाव बनाता था। पुलिस ने रिपोर्ट दर्ज करते हुए आरोपितों के खिलाफ धारा 354, 450, 506, 376(3), 376 (डी), 376(2) (एफ), पाक्सो एक्ट की धारा 5/6, 5(एल) /6, 7/8, धार्मिक स्वतंत्रता अधिनियम की धारा 3/5 के तहत प्रकरण दर्ज किया। अभियोजन की ओर से लोक अभियोजक सुशीला राठौर ने पैरवी की। विशेष न्यायाधीश सुरेखा मिश्रा ने प्रकरण में निर्णय पारित करते हुए बालिका के सौतेले पिता को 20 वर्ष कठोर कारावास और 59 हजार रुपये अर्थदंड की सजा सुनाई। कोर्ट ने बालिका को प्रतिकर के रूप में एक लाख रुपये दिलवाए जाने की अनुशंसा भी की है। मामले में नाबालिग आरोपित के खिलाफ बाल न्यायालय में प्रकरण विचाराधीन है।

बच्चों के यौन शोषण पर तत्काल शिकायत करें, पुलिस करेगी कार्रवाई

इंदौर। पॉक्सो अधिनियम बच्चों को यौन शोषण के अपराधों से बचाने का प्रावधान है। यह कानून न सिर्फ बालिकाओं के यौन शोषण बल्कि नाबालिग लड़कों के साथ भी कोई अश्लील छेड़-छाड़ होती है तो उसे भी अपराध की ही श्रेणी में माना जाएगा। इस अधिनियम के तहत दुष्कर्म की पारंपरिक परिभाषा के अलावा उन कृत्यों को भी दुष्कर्म के संज्ञा दी गई है। जिससे बच्चे के साथ गलत भावना से छेड़-छाड़ की जाती है। यदि किसी व्यक्ति का पॉक्सो एक्ट के अन्तर्गत दोष सिद्ध हो जाता है तो उसे अपराधी मानते हुए कड़ी सजा देने का प्रावधान रखा गया है। पॉक्सो एक्ट में संशोधन से पहले अग्रिम जमानत का प्रावधान था। लेकिन संशोधन के बाद आरोपी को अग्रिम जमानत भी नहीं दी जाती। अगर आप या आपका कोई जानने वाला यौन शोषण का शिकार हुआ है तो आप पॉक्सो एक्ट के तहत शिकायत दर्ज करा सकते हैं। पहला कदम पुलिस से संपर्क करना और घटना की रिपोर्ट करना है। आप या तो व्यक्तिगत रूप से पुलिस स्टेशन जा सकते हैं या शिकायत दर्ज कराने के लिए पुलिस हेल्पलाइन नंबर पर कॉल भी कर सकते हैं। आपको घटना की तिथि, समय और स्थान के साथ-साथ यदि संभव हो तो अपराधी की पहचान जैसे विवरण प्रदान करने की आवश्यकता होगी। पुलिस दुर्व्यवहार के सबूत इकट्ठा करने के लिए पीड़िता की मेडिकल जांच की व्यवस्था करेगी। अगर पुलिस को पता चलता है कि शिकायत पॉक्सो अधिनियम के दायरे में आती है, तो वे प्रथम सूचना रिपोर्ट दर्ज करेंगे और जांच शुरू करेंगे। पॉक्सो अधिनियम के तहत एक नामित अदालत में मामले की कोशिश की जाएगी। पीड़िता और गवाहों को कोर्ट में गवाही देनी होगी। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि पॉक्सो अधिनियम पीड़ित और गवाहों की पहचान की सुरक्षा के लिए भी प्रावधान करता है। पॉक्सो के तहत पुलिस की जिम्मेदारिया पुलिस इस कानून को लागू करने और ऐसे अपराधों के पीड़ितों के लिए न्याय सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पॉक्सो एक्ट के तहत जब किसी बच्चे के खिलाफ यौन अपराध की शिकायत प्राप्त होती है, तो पुलिस को तुरंत शिकायत दर्ज करेगी। पुलिस पीड़ित या किसी गवाह के बयान को इस तरह से दर्ज करने के लिए जिम्मेदार है जो बच्चे की उम्र, लिंग और मानसिक स्थिति के प्रति संवेदनशील हो। पुलिस को यह सुनिश्चित करेगी कि अपराध के सबूत इक?ट्ठा करने के लिए शिकायत के 24 घंटे के भीतर पीड़िता की मेडिकल जांच हो। यदि अपराध में उनकी संलिप्तता का उचित संदेह है तो पुलिस के पास आरोपी व्यक्ति को बिना वारंट के गिरफ्तार करने की शक्ति है। पुलिस को जांच और मुकदमे के दौरान सुरक्षा और सहायता प्रदान करने सहित पीड़ित की सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए। पुलिस को अपराध की गहन जांच करनी चाहिए, अपराध से संबंधित सभी सबूतों को इक?ट्ठा करना चाहिए और उसे कोर्ट में पेश करना चाहिए।

नोटा में इंदौर बन गया देश में नंबर वन

सिटी चीफ इंदौर।
लोकसभा चुनाव में इंदौर इस बार सबसे ज्यादा चर्चा में रहा। पहले कांग्रेस प्रत्याशी अक्षय कांति बम के नामांकन वापस लेने की वजह से और फिर परिणाम के बाद तीन नए रिकॉर्ड बनाने की वजह से। परिणामों में इंदौर ने सबसे ज्यादा नोटा और सबसे बड़ी जीत का रिकॉर्ड बनाया है। तो वहीं किसी भाजपा प्रत्याशी को 12 लाख वोट मिलने का कीर्तिमान भी रचा गया। नोटा को 218674 वोट मिले हैं और भाजपा के प्रत्याशी शंकर लालवानी 1226751 वोटों के साथ 1175092 वोट के अंतर से जीते हैं। इंदौर लोकसभा सीट के चुनाव में नोटा ने इतिहास रच दिया। देश में पहली बार किसी सीट पर नोटा को 2.18 लाख वोट मिले हैं। यह अब तक हुए चुनावों में किसी भी परिणाम से ज्यादा हैं। पिछले चुनावों में नोटा को सिर्फ 5 हजार और कुछ वोट मिलते आए थे। साथ ही नतीजे ने देश में नोटा को सबसे ज्यादा वोट मिलने का बिहार का रिकॉर्ड भी तोड़ दिया है।

नोटा राजनीतिक तौर पर कुछ न बदल पाया हो, लेकिन उसने वोटों के दम पर देश में वोटिंग एनालिसिस का तरीका ही बदल दिया है। देश में पहली बार इंदौर में किसी निकटतम प्रतिद्वंद्वी के बजाय विजेता उम्मीदवार की जीत का अंतर चुनाव आयोग ने नोटा से किया है। उदाहरण के तौर इंदौर में बसपा प्रत्याशी संजय सोलंकी को 50 हजार से ज्यादा वोट मिले हैं। बावजूद चुनाव आयोग ने अपने रियल टाइम आंकड़ों में भाजपा सांसद शंकर लालवानी की जीत के अंतर को नोटा को मिले वोटों से घटाकर दर्शाया है।

पहले किसके नाम थे ये रिकॉर्ड
सांसद शंकर लालवानी ने देश में सबसे बड़ी जीत हासिल कर ली है। जीत का अंतर 1175092 है। इससे पहले, 2019 में सबसे बड़ी जीत गुजरात की नवसारी सीट के नाम पर थी। वहां भाजपा के सीआर पाटिल नवसार सीट से 6.90 लाख वोटों से जीते थे। नोटा को पहली बार देश में 2,18,674 ज्यादा वोट मिल गए हैं। अब तक देश में रिकॉर्ड बिहार की गोपालगंज सीट के नाम पर था। उसे 2019 में देश में सबसे ज्यादा 51,600 वोट मिले थे। प्रदेश में किसी भाजपा नेता को सर्वाधिक वोट मिले हैं। शंकर लालवानी संभतया पहले ऐसे सांसद बन गए, जिन्हें 12 लाख से ज्यादा वोट मिले हैं।

नोटा के लिए न कोई सभा हुई, न रोड शो...फिर भी
कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी ने जनता से अपील की थी कि नोटा को वोट करें। अक्षय कांति बम के नामांकन वापस लेने के बाद में कांग्रेस ने नोटा के प्रचार में अभियान भी चलाया था। कांग्रेस प्रत्याशी अक्षय बम के नाम वापस लेने के बाद कांग्रेस ने नोटा को समर्थन देने का ऑप्शन चुना। कांग्रेस को पिछले चुनाव में 5.20 लाख वोट मिले थे। दावा किया था कि इस बार नोटा बीजेपी के समीकरण बिगाड़ेगा। नतीजों से तुलना करें तो नोटा को कांग्रेस की उम्मीद से ज्यादा 2.18 लाख वोट मिल गए हैं। इसके लिए न कोई सभा हुई, न रोड शो.. । यहां तक कि पोलिंग डे पर कोई एजेंट टेबल तक नहीं लगने दी गई। बावजूद, नोटा ने सबको चौंका दिया है। बीजेपी ने नोटा के खिलाफ बयान दिए और न के बराबर वोट मिलने का दावा किया। बावजूद, ऐसा नहीं हुआ।

नोटा को इतने वोट क्यों मिले?
इंदौर में कांग्रेस प्रत्याशी की नाटकीय नामवापसी से पार्टी ही नहीं, बीजेपी के नेता-कार्यकर्ता और आम लोग भी हताश हुए थे। वे यह खुलेआम कहते थे कि जिस सीट पर बीजेपी को 40 साल से कोई नहीं हरा सका, वहां इसकी जरूरत ही क्या थी। यही वजह है कि नोटा का रिकॉर्ड बन गया। इस बार पिछले चुनावों के मुकाबले नोटा का वोट 42 गुना बढ़ गया है।

एक ही दिन में लालवानी ने तोड़ा अमित शाह का रिकार्ड
मंगलवार को गृहमंत्री अमित शाह 7 लाख 11 हजार से अधिक वोटों से जीतने की रिकॉर्ड बना रहे थे, तभी खबर पहुंची की इंदौर से भाजपा के ही प्रत्याशी शंकर लालवानी अपने निकटतम प्रतिद्वंदी नोटा से तकरीबन 10 लाख वोटों से ज्यादा वोटों से आगे चल रहे हैं, जो कि गृहमंत्री शाह के द्वारा आज ही बनाये गए रिकॉर्ड को तोड़ दिया है। इसी बीच इलेक्शन कमिशन ने बाताया कि उनकी जीत का अंतर नोटा से नहीं बल्कि पार्टी के उम्मीदवार, जोकि बासपा के कैंडिडेट हैं उनसे की जाएगी। बासपा के कैंडिडेट संजय सोलंकी को मात्र 51 हजार वोट मिले हैं। लालवानी 11 लाख वोटों से जीत दर्ज की है।

लालवानी ने कहा कांग्रेस ने दुष्प्रचार किया
परिणाम आने के बाद शंकर लालवानी ने कहा कि कांग्रेस ने दुष्प्रचार किया जिसकी वजह से नोटा को इतने अधिक वोट मिले। कांग्रेस ने जिस तरह से चुनाव के दौरान लोगों से नोटा को वोट देने की अपील की उससे गलत संदेश गया।

लालवानी ने जीत का श्रेय दिया पीएम मोदी को
रिकॉर्ड मतों से जीत को लेकर बीजेपी प्रत्याशी शंकर लालवानी ने कहा कि यह जीत पीएम मोदी की नीतियों की जीत है। बीजेपी के कार्यकर्ताओं की जीत है। यह इंदौर की जीत है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस ने नोटा के लिए आह्वान किया था लेकिन उन्हें पिछले बार की तुलना में आधे भी वोट नहीं मिले। जबकि भाजपा ने पिछली बार से अधिक वोट प्राप्त किए और जीत हासिल की है। कांग्रेस का प्रत्याशी भी यदि सामने होता तो हमे कोई फर्क नहीं पड़ता क्योंकि हमारे नेतृत्व और संगठन ने कड़ी मेहनत की थी।

यह रिकॉर्ड टूटने वाला नहीं है- विजयवर्गीय
नगरीय प्रशासन मंत्री कैलाश विजयवर्गीय ने कहा कि यह पीएम मोदी की नीतियों और बीजेपी के कार्यकर्ताओं की जीत है। इसका असली श्रेय बीजेपी के कार्यकर्ताओं को जाता है क्योंकि उनकी कड़ी मेहनत से ही बीजेपी ने ये जीत हासिल की है। वहीं, यदि नोटा पर रिकॉर्ड मतों की बात करते है तो आपको शंकर लालवानी की इस जीत के रिकॉर्ड की भी बात करना चाहिए। यह जीत रिकॉर्ड जीत है, जो कभी टूटने वाला रिकॉर्ड नहीं है। मध्य प्रदेश में क्लीन स्वीप करने का मतलब प्रदेश की जनता पीएम मोदी को बहुत प्रेम करती है।

विवादों से दूर रहना पसंद करते हैं लालवानी

शंकर लालवानी को उनके मिलनसार व्यक्तित्व के लिए पहचाना जाता है। वे विवादों से दूर रहना पसंद करते हैं और भाजपा के अधिकांश वरिष्ठ नेता उन्हें पसंद करते हैं। वे भाजपा की गुटबाजी से भी दूरी बनाकर रखते हैं। शंकर लालवानी का जन्म 16 अक्टूबर 1961 को इंदौर में हुआ था। उनके पिता जमनादास लालवानी अखंड भारत के विभाजन से पहले इंदौर आए थे। जमनादास लालवानी इंदौर आकर भी आरएसएस में सक्रिय थे। वे जनसंघ पार्टी में थे और सामाजिक कामों में सक्रिय रहते थे। वे कई वर्षों तक मध्य प्रदेश में सराफा एसोसिएशन के अध्यक्ष भी रहे। शंकर लालवानी की माताजी गोरी देवी लालवानी एक गृहिणी थीं। शंकर लालवानी ने मध्यप्रदेश माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से हायर सेकेंडरी की परीक्षा पास की, फिर मुंबई से बी-टेक की पढ़ाई की फिर इंदौर आकर व्यापार और कंसल्टेंसी में लग गए।

पिछले सांसद चुनाव में पांच लाख वोट से जीते थे
1994 से 1999 तक लालवानी इंदौर नगर निगम में पार्षद रहे। इसके बाद 1999 से 2004 तक वे 5 वर्ष तक इंदौर नगर निगम के सभापति पद पर रहे। 2013 में इंदौर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष बनाए गए। 2019 में जब भारतीय जनता पार्टी ने उन्हें लोकसभा का टिकट दिया तो भारतीय जनता पार्टी करीब 5 लाख 47 हजार वोटों के ऐतिहासिक अंतर से अपने निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस पार्टी से जीत हासिल की।

मालवा-निमाड़ में न संविधान संशोधन का मुद्दा चला न जाति की सियासत, आठों सीटें भाजपा की झोली में

सिटी चीफ इंदौर।
मध्य प्रदेश की सियासत में मालवा-निमाड़ यूं ही सिरमौर नहीं कहा जाता। इस क्षेत्र का राजनीतिक रंग कुछ अलहदा ही रहता है। चुनाव चाहे विधानसभा का हो या लोकसभा का, राजनीतिक दल भी यहां की चुनावी फिजा का तब तक अंदाजा नहीं लगा पाते, जब तक कि परिणाम घोषित नहीं हो जाता। 2023 के विधानसभा चुनाव में भाजपा की प्रचंड लहर के बाद भी मालवा-निमाड़ के आदिवासी बहुल जिलों में कांग्रेस को सफलता मिली थी। उसके ठीक बाद हुए लोकसभा चुनाव में मालवा-निमाड़ क्षेत्र की आठ सीटों को लेकर भाजपा और कांग्रेस दोनों ने यहां पुरजोर लगाया। भाजपा जहां 2019 के लोकसभा चुनावपरिणामों को केंद्र में रखकर आश्वस्त थी कि इस बार भी यह क्षेत्र उसी का साथ देगा तो कांग्रेस विधानसभा चुनाव में आदिवासी मतदाता बहुल क्षेत्र में मिली सफलता को लोकसभा चुनाव में दोहराने के लिए जतन कर रही थी, लेकिन चौंकाने वाले परिणाम देने वाले इस क्षेत्र ने छह माह में ही कांग्रेस को जोरदार झटका दिया है। यहां की आठों सीटें भाजपा ने बड़े अंतर से जीत ली। भाजपा का गढ़ कहे जाने वाले इंदौर में तो भाजपा प्रत्याशी ने देश की सबसे बड़ी जीत का रिकार्ड भी अपने नाम कर लिया। अंचल की शेष सात सीटों के भाजपा प्रत्याशियों ने अपने क्षेत्र में पिछली जीत का रिकार्ड तोड़ दिया।

आदिवासी क्षेत्रों ने भी बदलाव को नहीं अपनाया
मालवा-निमाड़ क्षेत्र में इंदौर, उज्जैन और मंदसौर लोकसभा क्षेत्रों को छोड़ दिया जाए तो शेष पांच लोकसभा क्षेत्र- धार, झाबुआ-रतलाम, खरगोन-बड़वानी, खंडवा और देवास में आदिवासी मतदाता निर्णायक भूमिका में हैं। कांग्रेस-भाजपा के बीच इसी क्षेत्र से ज्यादा से ज्यादा मत प्राप्त करने की जंग पूरे चुनाव में चल रही थी।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने झाबुआ के जोबट व खरगोन जिले में चुनावी सभा में भाजपा पर संविधान में संशोधन कर आदिवासियों को उनके हक से वंचित करने जैसे आरोप लगाए थे। उधर खरगोन और धार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी चुनावी सभाओं में कांग्रेस पर आदिवासियों के लिए कुछ नहीं करने और भाजपा द्वारा उनके नायकों को मान दिए जाने की बात कही थी।

कांग्रेसी अपनी सभाओं में उमड़ रही भीड़ से खासे उत्साहित थे कि इन क्षेत्रों से जुड़े लोकसभा सीटों पर वह भाजपा को कड़ी टक्कर दे रही है, लेकिन चुनाव परिणामों में स्थिति इसके बिलकुल उलट सामने आई। झाबुआ-रतलाम संसदीय क्षेत्र में वरिष्ठ कांग्रेस नेता और पूर्व केंद्रीय मंत्री कांतिलाल भूरिया मतगणना शुरू होने के बाद से ही पिछड़ते चले गए। दरअसल, कांग्रेस को छिंदवाड़ा के बाद सबसे ज्यादा उम्मीद झाबुआ-रतलाम सीट से ही थी। यहां भाजपा प्रत्याशी के विरुद्ध कुछ कांग्रेस नेताओं ने भील और भिलाला जाति कार्ड भी चलाया, लेकिन मतदाताओं ने इसे भी नकार दिया।

नए चेहरों पर लगाया दांव लेकिन काम नहीं आया
भगवान महाकाल की नगरी उज्जैन और भगवान ओंकार के क्षेत्र खंडवा व भगवान पशुपतिनाथ की नगरी मंदसौर में भी कांग्रेस का न नए चेहरों पर लगाया दांव काम आया, न अनुभव को वरीयता देने की जुगत कारगर रही। उज्जैन में कांग्रेस ने दूसरी बार के विधायक महेश परमार को प्रत्याशी बनाया था, लेकिन उन्हें भी करीब 4 लाख से ज्यादा वोटों से हार का सामना करना पड़ा। इसी तरह धार, मंदसौर, खरगोन और खंडवा में नए चेहरों पर दांव लगाने की रणनीति भी कारगर नहीं रही।

पक्ष-विपक्ष के पांच बड़े नेताओं ठोंकी थी ताल, सफलता भाजपा के पाले में

विधानसभा चुनाव के बाद प्रदेश की सियासत में मालवा का पलड़ा भारी माना जाता है। मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव उज्जैन से विधायक हैं तो उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा मंदसौर के मल्हारगढ़ से विधायक हैं। भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय महासचिव और प्रदेश के केबिनेट मंत्री कैलाश विजयवर्गीय इंदौर से विधायक हैं।

कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी भी इंदौर के राऊ क्षेत्र से हैं जबकि नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार धार जिले के गंधवानी क्षेत्र से विधायक हैं। बड़े नेताओं की मौजूदगी की वजह से भी लोकसभा चुनाव को इन नेताओं की प्रतिष्ठा से जोड़कर देखा जा रहा था। लेकिन इस चुनाव में कांग्रेस के दोनों ही बड़े नेता खास प्रभाव नहीं छोड़ सके। मुख्यमंत्री, उपमुख्यमंत्री और विजयवर्गीय ने मालवा-निमाड़ के साथ ही अन्य क्षेत्रों में भी लगातार दौरे किए और मालवा-निमाड़ में बड़ी जीत की राह प्रशस्त कर दी।

इंदौर लोकसभा सीट पर बिना लहर के चुनाव में भी लहरदार जीत

सिटी चीफ इंदौर।
इंदौर की भूमि मतों के लिहाज से हमेशा ही भगवा दल भाजपा के लिए उर्वरा रही है, मगर इस बार ईवीएम खुली तो इससे इंदौर के परिपक्व लोकतंत्र होने का परिणाम निकला। चुनाव की घोषणा के बाद से ही राजनीतिक दलों को इंदौर लोकसभा सीट के परिणाम के स्पष्ट संकेत थे, लेकिन बाद के घटनाक्रमों ने मतदान से पहले ही मुकाबला एकतरफा कर दिया, फिर भी जनता ने अपनी जिम्मेदारी निभाते हुए भगवा दल के प्रति स्नेह दिखाने के साथ ही लोकतंत्र की सुंदरता और शक्तिसंपन्नता को भी मजबूत किया। यह चुनावी इतिहास में संभवत- पहला मौका होगा जब पक्ष और प्रतिपक्ष दोनों को सबसे ज्यादा मत मिले हों। देश में बीते दो चुनाव की तुलना में इस बार कोई चुनावी लहर न थी। हर दल के मुद्दे थे और मुद्दे भी समय के साथ बदलते जा रहे थे। इंदौर का अपना कोई मुद्दा भी न था। कांग्रेस के पास प्रत्याशी न था तो उसके कार्यकर्ता वैसे ही उत्साहहीन थे। भाजपा के सामने इस बार अपने गढ़ में कोई प्रतीकात्मक चुनौती भी न थी। जब सामने विपक्षी सेना न हो तो सैनिकों में जंग का जोश नहीं होता। मतदान केंद्रों पर भी कतारें न थीं। पिछली बार की तुलना में आठ फीसद कम मत पड़े, लेकिन परिणाम आया तो जीत का कीर्तिमान बन चुका था। कुछ की नजर में यह किस्मत हो सकती है, लेकिन लक्ष्य प्राप्ति के प्रति भाजपा की समर्पित कार्यशैली को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है। भाजपा के आधिकारिक कार्यक्रमों का ब्योरा बताता है कि 20 मार्च से 10 मई तक लालवानी ने 478 सार्वजनिक कार्यक्रमों में शिरकत की। अनुमानित 4 लाख 70 हजार से ज्यादा मतदाताओं से सीधा संपर्क किया। तेज गर्मी में सड़क नापना आसान न था। संघ ने भी कसर न छोड़ी और विधायकों को भी मैदान में उतार दिया। लोकतांत्रिक व्यवस्था में विपक्ष का भी अहम योगदान है। कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष जीतू पटवारी के शहर में पार्टी के पास प्रत्याशी न था। दिल्ली में 100 करोड़ का आबकारी नीति घोटाला देशभर में चर्चा का विषय बना, लेकिन इंदौर नगर निगम घोटाला सवा सौ करोड़ का होने के बाद भी पार्टी मुद्दा न बना सकी।

नए चुनावी समीकरण का संकेत
बहुजन समाज पार्टी अपने ही गृह उत्तर प्रदेश में अर्थहीन हो चुकी है, लेकिन इंदौर में पार्टी प्रत्याशी को 51 हजार से ज्यादा मत मिलना नए राजनीतिक समीकरण की ओर ईशारा है। शहर में बसपा का कभी जनाधार नहीं रहा और न ही वर्तमान में सक्रीय संगठन नजर आता है, मुद्दे भी नहीं है और प्रत्याशी का खास जनपरिचय भी नहीं। इसके बावजूद इतने मत मिलना कांग्रेस के लिए खतरे की घंटी है। जनता अब विपक्ष में भी विकल्प तलाश रही है।

नीरस रहे चुनाव में इंदौरियों ने रिकार्डों के बहाने खुशी का ढूंढा मौका

सिटी चीफ इंदौर।
स्वच्छता में सात बार से रिकार्ड बनाने वाले इंदौरवासियों ने लोकसभा चुनाव के नीरस मुकाबले में भी मतों का अनूठा रिकार्ड बनाकर एक बार फिर शहर को देश ही नहीं विश्व पटल पर चर्चा में ला दिया। शुरुआत से ही इंदौर में चुनावी रण का मुकाबला नीरस था। इंदौर में अब तक हुए लोकसभा चुनाव के मुकाबलों में सुमित्रा महाजन जैसी भाजपा की मजबूत प्रत्याशी होने के बाद भी कांग्रेस मजबूती से मैदान में लड़ती थी। इस बार भाजपा ने दल-बदल की रणनीति पर अमल करते हुए कांग्रेस के कई नेताओं को अपने साथ जोड़ा। स्थिति ऐसी बनी कि शहर में कांग्रेस के लिए प्रत्याशी का टोटा हो गया।

जैसे-तैसे कांग्रेस ने अक्षय बम को प्रत्याशी बनाया लेकिन उसे भी ऐन वक्त पर भाजपा के वरिष्ठ नेताओं ने अपने पाले में लेकर चुनावी मैदान खाली करवा लिया। मुकाबला एकतरफा था लेकिन होली, रंगपंचमी की गेर, अनंत चतुर्दशी की झांकी जैसे त्योहारों को जोर-शोर से मनाने वाले इंदौरियों ने चुनावी त्योहार में भी अपने घरों से बाहर निकले व दिल खोलकर अपने मताधिकार का प्रयोग किया। मतदाताओं की इस जीवटता का ही परिणाम है कि इंदौर ने इस बार न सिर्फ भाजपा प्रत्याशी शंकर लालवानी को रिकार्ड तोड़ वोट देकर देश में एक अलग पंक्ति में खड़ा कर दिया, बल्कि लोकतंत्र के प्रति अपनी गहरी आस्था का परिचय भी दिया। इधर प्रत्याशी न होने की स्थिति में कांग्रेस ने इस बार नोटा को अपना प्रत्याशी बनाया था। ऐसे में कांग्रेस का परंपरागत वोटर भी चुनावी मुकाबले की नीरसता के बावजूद मैदान में वोट देने आया और नोटा का बटन दबाया। यही वजह है कि दो लाख 18 हजार 674 इंदौरवासियों ने नोटा को वोट देकर देश में एक नया कीर्तिमान बना दिया। आसान जीत से लालवानी इस बार भले ही लोकसभा में पहुंच जाए लेकिन शहरवासियों ने अपने वोट की ताकत दिखाकर उन्हें आगाह कर दिया है कि यदि शहरवासियों के विकास व हित में उन्होंने कदम नहीं उठाया और पिछले कार्यकाल की तरह ही चुप्पी थामे रहे तो अगले चुनावी परिणाम उनके लिए इतने आसान नहीं रहेंगे। लालवानी ने इस बार भले ही चुनाव लड़ने के लिए मैदानी दौड़ नहीं लगाई लेकिन अगली बार पार्टी व खुद को मजबूत बनाने के साथ इंदौर के जन का मन समझने के लिए उन्हें अगले पांच साल मैदान में रहना होगा। इंदौरवासियों को अब लालवानी से रिकार्ड जीत के दिए उपहार के बदले में विकास के रिटर्न गिफ्ट की दरकार होगी।

पुलिस थाने में रखे जाएंगे परीक्षा के प्रश्नपत्रों के बंडल, भोपाल जिले से 1324 विद्यार्थी होंगे शामिल

21 जून से शुरू होंगी नौवीं व 11वीं की पूरक परीक्षा

सिटी चीफ भोपाल।
भोपाल। सरकारी स्कूलों की नौवीं व 11वीं की पूरक परीक्षा 21 जून से शुरू होगी। लोक शिक्षण संचालनालय ने पूरक परीक्षा की समय-सारिणी जारी कर दी है। जारी समय सारिणी के अनुसार 11वीं की पूरक के सभी विषयों की परीक्षा 21 जून को आयोजित की जाएगी।परीक्षा का समय सुबह आठ से 11 बजे तक रहेगा।वहीं, नौवीं की परीक्षा 22 जून से शुरू होगी। 22 जून को पहला पेपर हिंदी का रहेगा। 24 जून को अंग्रेजी, 25 जून को उर्दू, 26 जून को सामाजिक विज्ञान, 27 जून को एनएसक्यूएफ के समस्त विषय, 28 जून को संस्कृत, 29 जून को विज्ञान, एक जुलाई को गणित व दो जुलाई को मराठी, मूक बधिर व दृष्टिहीन विद्यार्थियों के पेपर होंगे।नौवीं की परीक्षा का समय सुबह आठ से 11 बजे तक रहेगा। इसके लिए प्रत्येक जिले के उत्कृष्ट विद्यालयों में केंद्र बनाया जाएगा।

11 लाख में से करीब ढाई लाख विद्यार्थी फेल हुए

प्रदेश भर से नौवीं व 11वीं में 11 लाख में से करीब ढाई लाख विद्यार्थी फेल हुए हैं। वहीं दोनों कक्षाओं में करीब 82 हजार विद्यार्थियों को पूरक आया है। इन विद्यार्थियों की पूरक परीक्षाएं भी बोर्ड पैटर्न के आधार पर होंगी। परीक्षा के लिए तैयार किए जाने वाले पेपर भी बोर्ड पैटर्न पर बनेंगे। राज्य ओपन बोर्ड प्रश्नपत्र तैयार करेगा।पूरक परीक्षा में शामिल विद्यार्थियों की उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन जिला उत्कृष्ट विद्यालयों में किया जाएगा। इसके लिए मूल्यांकन केंद्राधिकारियों को माडल आंसर पोर्टल से प्राप्त कर सकेंगे।पूरक परीक्षा के प्रश्नपत्रों के बंडल पुलिस थाने में रखे जाएंगे।

भोपाल जिले से 1324 विद्यार्थी पूरक परीक्षा में शामिल होंगे

भोपाल जिले में नौवीं व 11वीं में 1324 विद्यार्थी पूरक परीक्षा में शामिल होंगे। इसमें नौवीं में 787 विद्यार्थी पूरक व 2837 फेल हुए हैं। साथ ही 11वीं में 537 को पूरक और 531 फेल हुए हैं।

शिक्षा मंडल भोपाल की लापरवाही

छात्रा पहले गणित में हुई फेल री-टोटलिंग में मिले 60 अंक

सिटी चीफ भोपाल।
भोपाल। शिवपुरी जिले में माध्यमिक शिक्षा मंडल की लापरवाही का मामला सामने आया है। माध्यमिक शिक्षा मंडल की 12वीं की परीक्षा में शिवपुरी की छात्रा को गणित विषय में फेल कर दिया गया। जब बाद में छात्रा ने री-टोटलिंग का आवेदन भरा तो उसके 60 अंक हो गए।

जानकारी के मुताबिक बामौरकलां की रहने वाली छात्रा सिद्धि गुप्ता पुत्री विवेक गुप्ता ने इस साल गणित संकाय से 12वीं कक्षा के पेपर दिए। लेकिन जब रिजल्ट आया तो सिद्धि गुप्ता को गणित विषय में मात्र सात अंक दे दिए गए और उसकी सप्लीमेंट्री आ गई। छात्रा सिद्धि गुप्ता को अपना यह रिजल्ट देखकर विश्वास ही नहीं हुआ कि उसके गणित में इतने कम अंक कैसे आ गए। जबकि उसका तो अच्छा पेपर गया था। लेकिन जब छात्रा ने री-टोटलिंग के लिए आवेदन दिया और इसकी जांच हुई तो पता चला उसके सात अंक नहीं, बल्कि 60 अंक आए थे। कॉपी की री-टोटलिंग कराए जाने पर परीक्षा जांचने की गलती पकड़ी गई। री-टोटलिंग के बाद रिजल्ट सही आने पर छात्रा सिद्धि गुप्ता ने कहा कि मैं इतने दिनों तक मानसिक और सामाजिक प्रेशर में रही। इसके लिए माध्यमिक शिक्षा मंडल जिम्मेदार है। लेकिन आगे इस तरह की गलती न हो, इस पर माध्यमिक शिक्षा मंडल बोर्ड को ध्यान देने की आवश्यकता है।

लैपटॉप के लिए हो गई पात्र

एमपी बोर्ड की इस लापरवाही के इस मामले में सबसे ज्यादा छात्रा के परिवारजनों को बहुत परेशानी हुई। क्योंकि छात्रा पढ़ने में अच्छी थी। गणित विषय में मात्र सात अंक देखकर उनको भी इस पर विश्वास नहीं हुआ कि सिद्धि गुप्ता का पेपर तो अच्छा गया था।

उत्तराखंड में दमोह के युवक की चट्टान गिरने से मौत

सिटी चीफ भोपाल।
दमोह निवासी एक युवक की हरिद्वार में चट्टान गिरने से मौत हो गई। मृतक दमोह शहर के नया बाजार निवासी पप्पू रैकवार का बेटा उमेश रैकवार है, जो शनिवार को अपने साथियों के साथ दमोह में हरिद्वार के लिए रवाना हुआ था। इस घटना के बाद परिवार में और शहर में मातम है।

हादसा सोमवार शाम करीब छह बजे गंगोत्री धाम के पास हुआ। तीर्थ यात्रियों से भरी एक गाड़ी पर पत्थर की चट्टान गिरी है। वाहन में दमोह के आठ तीर्थ यात्री सवार थे।

इनमें से 30 साल के उमेश पिता पप्पू रैकवार की मौत हो गई। उमेश दमोह के नया बाजार का रहने वाला था। कंट्रोल रूम से मिली जानकारी के मुताबिक तीर्थ यात्रियों की बस यमुनोत्री से गंगोत्री की ओर जा रही थी। बस जब सुनगर के नजदीक पहुंची तभी बस के गेट पर पहाड़ से खिसकी एक बड़े पत्थर की चट्टान जाकर टकरा गई। हादसे के वक्त दमोह निवासी उमेश रैकवार गेट के नजदीक की सीट पर बैठे हुए थे। चट्टान की चपेट में आने से उनकी मौके पर मौत हो गई। उमेश को शनिवार को उनके पिता पप्पू रैकवार स्टेशन छोड़ने गए थे।

रैकवार समाज के अध्यक्ष मोंटी रैकवार ने बताया कि उमेश धार्मिक प्रवृत्ति का था। वह हर साल हरिद्वार यात्रा पर जाता था। इस बार भी वह दोस्तों के साथ तीर्थ यात्रा पर गया था, तभी यह हादसा हुआ। बाकी सभी लोग सुरक्षित हैं। उमेश का शव लेकर दमोह के लिए रवाना हुए हैं। उमेश के पिता पप्पू रैकवार टेंट का काम करते हैं उसके तीन भाई और एक बहन है।

प्रदेश में तय समय पर पहुंचेगा मानसून

आज प्रदेशभर में आंधी और गरज-चमक का येलो अलर्ट जारी

सिटी चीफ भोपाल।
मध्यप्रदेश में भीषण गर्मी के बीच कई जगह बारिश से लोगों को राहत मिली है। मौसम विभाग ने एक बार फिर 5 जून को प्रदेशभर में आंधी-बारिश को लेकर यलो अलर्ट जारी किया है। इस दौरान कई जिलों में बारिश की स्थिति बनेगी। साथ ही तेज हवा भी चलेगी।

प्री-मानसून के चलते प्रदेश की राजधानी भोपाल समेत कई शहरों में दोपहर बाद तेज हवाओं के साथ बारिश हुई, जिससे तापमान में गिरावट आई है। वहीं, छतरपुर के बिजावर और निवाड़ी का पृथ्वीपुर सबसे गर्म रहा। बिजावर में तापमान 45.8 और निवाड़ी में 45.5 डिग्री दर्ज किया गया। मौसम विभाग के सीनियर वैज्ञानिक वेद प्रकाश सिंह ने बताया कि केरल में एक दिन पहले दस्तक देने के बाद मानसून तेजी से आगे बढ़ रहा है। इससे प्रदेश में समय पर पहुंचने का अनुमान है। वर्तमान में साइक्लोनिक सर्कुलेशन, ट्रफ लाइन और वेस्टर्न डिस्टरबेंस की वजह से आंधी, बारिश का दौर बन रहा है। यह अगले कुछ दिन तक जारी रहेगा। इन शहरों में है आंधी-बारिश की संभावना-

आईएमडी भोपाल ने 5 जून को प्रदेश के जिन शहरों में आंधी गरज चमक की संभावना जताई है, उनमें भोपाल, जबलपुर, ग्वालियर, श्योपुरकलां, मुरैना, भिंड, शिवपुरी, अशोकनगर, विदिशा, रायसेन, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, खंडवा, बुरहानपुर, खरगोन, बड़वानी, सागर, पांढुर्णा, छिंदवाड़ा, छतरपुर, दमोह, पन्ना, मैहर, कटनी, सिवनी, बालाघाट, मंडला, डिंडोरी, अनूपपुर। पांच जून को श्योपुरकलां, शिवपुरी, अशोकनगर, मुरैना, अनूपपुर, डिंडोरी, मंडला, बालाघाट, सिवनी, छिंदवाड़ा, पांढुर्णा, नर्मदापुरम, बैतूल, हरदा, खंडवा, बुरहानपुर और खरगोन शामिल हैं।

आयोग में अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मुख्यमंत्री को लिखा है पत्र

7 साल से खाली पड़ा महिला आयोग पीड़िताओं को नहीं मिल रहा न्याय

सिटी चीफ भोपाल।
भोपाल। मध्य प्रदेश में महिला अपराध के मामले लगातार बढ़ रहे हैं। पीड़ित महिलाओं को न्याय नहीं मिल पा रहा है। इसका कारण है कि राज्य महिला आयोग की बेंच सात साल से लगी ही नहीं है। दरअसल, आयोग में ना तो अध्यक्ष हैं और ना ही सदस्य। इस कारण प्रदेशभर की पीड़ित महिलाएं न्याय के लिए भटक रही हैं।

राज्य महिला आयोग में करीब 24 हजार मामले लंबित हैं, जबकि नियमानुसार किसी भी शिकायत पर 15 दिन के अंदर कार्रवाई करनी होती है। आयोग में 2018 के बाद से बेंच ही नहीं लगी है, इस कारण पीड़ित महिलाओं के मामले बढ़ रहे हैं। आयोग में करीब 3500 महिलाएं हर साल महिला आयोग में शिकायत दर्ज करवाने पहुंचती हैं। बता दें कि 2018 में आयोग की अध्यक्ष लता वानखेड़े का कार्यकाल खत्म होने के बाद 2019 में प्रदेश में कांग्रेस की सरकार ने 18 मार्च 2020 को शोभा ओझा को आयोग का अध्यक्ष बनाया और सदस्यों की नियुक्ति भी की थी। किंतु उसके बाद फिर से भाजपा की सरकार आई और नियुक्तियों का मामला कोर्ट पहुंच गया। इस दौरान एक भी दिन बेंच नहीं लगी। इसके बाद से 2022 में भाजपा की सरकार बनने के बाद महिला आयोग में अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति नहीं हो पाई है। इस कारण हिंसा पीड़ित महिलाओं को न्याय नहीं मिल पा रहा है। आयोग में अध्यक्ष और सदस्यों की नियुक्ति को लेकर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष जीतू पटवारी ने मुख्यमंत्री डा. मोहन यादव को पत्र भी लिखा है।

सुनवाई नहीं होने के कारण निराश होकर लौट रही महिलाएं

महिला आयोग में प्रदेशभर से प्रतिदिन नौ से 10 महिलाएं शिकायत दर्ज करवा रही हैं, लेकिन सुनवाई नहीं होने के कारण महिलाएं निराश होकर लौट रही हैं। अब तो महिलाओं को वहां जाने पर महिला थाना या जिला विधिक सेवा प्राधिकरण में काउंसिलिंग के लिए भेजा जा रहा है।

कल भक्ति भाव से मनाई जाएगी शनि जयंती

बुध-शुक्र से मित्रता और गुरु से समभाव रखते हैं शनि

सिटी चीफ भोपाल।
इस वर्ष शनि जयंती अमावस्या पर 6 जून को आ रही है। प्रत्येक वर्ष भगवान श्री शनि देव के जन्मोत्सव के रूप में इसे मनाया जाता है। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार शनि देव न्याय के भी देवता माने गए हैं। व्यक्ति के अच्छे एवं बुरे कर्मों का फल शनि देव देते हैं।

ज्योतिष आचार्य पं. अंकित दुबे के अनुसार माना गया है कि जो व्यक्ति अच्छे कर्म करता है उसे शनिदेव का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

भारतीय ज्योतिष में शनि देव सौरमंडल की 12 राशियों में मकर एवं कुंभ राशि के प्रभाव क्षेत्र में आती है। इन राशियों के स्वामी शनि देव हैं। शनि ग्रह एक राशि को साढ़ें सात एवं ढाई वर्षों तक प्रभावित करता है। शनि बुध व शुक्र से मित्रता और गुरु से समभाव रखता है। शनि को अति प्रिय वस्तु लोहा, काली तिल एवं काली वस्तु प्रभावित करती है। जिस व्यक्ति को शनि की महादशा साढ़ेसाती व ढैया चल रही है वे इस वर्ष 6 जून को यह उपाय करें। उसे शनि का आशीर्वाद प्राप्त होगा।

भगवान शनि को इस तरह करें प्रसन्न

सूर्य उदय के पूर्व या सूर्यास्त के पश्चात हनुमानजी को पूर्ण श्रद्धा से चोला चढ़ाएं एवं हनुमान चालीसा का आठ बार पाठ करें।
पीपल की वृक्ष की परिक्रमा करें उसमें गुड़ का पानी चढ़ाएं ।
काले कुत्ते की सेवा अथवा कुत्ते को ब्रेड, दूध और रोटी खिलाएं एवं काली गाय की सेवा करें ।
शनि देव के सात्विक मंत्र की 108 माला करें ओम शं शनिश्चराय नमः ।

रेलवे महाप्रबंधक ने स्टेशन के पुर्नविकास कार्य का किया निरीक्षण, कहा- एस्केलेटर भी लगाएंगे

संत हिरदाराम नगर स्टेशन पर जल्द बनेगा दूसरा प्रवेश द्वार

सिटी चीफ भोपाल।
भोपाल। पश्चिम मध्य रेल मंडल में शामिल संत हिरदाराम नगर रेलवे स्टेशन पर जल्द ही सेकंड एंट्री विकसित की जाएगी। रामगंज मंडी से आ रही तीसरी रेल लाइन पर ट्रेफिक शुरू होने के साथ ही सीटीओ छोर पर प्रवेश गेट बनेगा। यात्रियों की सुविधा के लिए फुटओवर ब्रिज के साथ ही एस्केलेटर (स्वचलित सीढ़ियों) का निर्माण भी किया जाएगा।

रेलवे महाप्रबंधक शोभना बंदोपाध्याय ने रविवार को स्टेशन के पुर्नविकास कार्य का निरीक्षण किया। इस दौरान पत्रकारों से चर्चा करते हुए उन्होंने कहा किसंत हिरदाराम नगर स्टेशन को राजधानी के तीसरे भव्य स्टेशन के रूप में विकसित किया जाएगा। स्टेशन पर यात्रियों की संख्या लगातार बढ़ रही हैं। ट्रेनों का स्टापेज बढ़ा है।

कुछ ट्रेनों का स्टापेज प्रस्तावित है। इसे देखते हुए इस स्टेशन को पैसेंजर फ्रेंडली बनाया जाएगा। जीएम ने कहा किस्टेशन को अगले 50 साल की जरूरतों के हिसाब से विकसित करने का प्रस्ताव है। स्टेशन को अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत विकसित करने का काम पिछले दिनों प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आनलाइन प्रारंभ कराया था। सीटीओ छोर पर प्रवेश गेट को लेकर संशय की स्थिति बनी हुई थी। जीएम अब साफ कर दिया है किसेकंड एंट्री विकसित होगी।

स्टेशन रोड चौड़ा करने के लिए ननि से

मदद लेंगे - जीएम ने स्टेशन के पहुंच मार्ग चौड़े करने पर जोर दिया। यहां मौजूद डीआरएम देवाषीष त्रिपाठी ने कहा किमार्ग चौड़े करने के लिए नगर निगम एवं जिला प्रशसन की मदद ली जाएगी। राज्य शासन फाटक की जगह ओवरब्रिज का निर्माण भी कर रहा है। ब्रिज का एक हिस्सा स्टेशन तक उतारने का प्रस्ताव है। ब्रिज के पास ही रेल प्रशासन मल्टी लेवल पार्किंग का निर्माण करा रहा है। जीएम एवं डीआरएम ने स्टेशन पर चल रहे कार्य का ले आउट प्लान देखा एवं अधिकारियों को तय समय सीमा में काम पूरा करने के निर्देश दिए। बैरागढ़ के संगठनों ने ज्ञापन देकर स्टेशन पर सफाई व्यवस्था में सुधार करने एवं रेलवे की ओर से संचालित पेयज व्यवस्था में सुधार की मांग की। रेल उपयोग कर्ता सलाहकार परिषद के राष्ट्रीय सदस्य नितेश लाल ने भी सफाई व्यवस्था में सुधार पर जोर दिया।

सम्पादकीय

आम जनता से कोसों दूर दिखे बीजेपी के मुद्दे...

बीजेपी को इस चुनाव में स्थानीय स्तर पर भी भारी नाराजगी झेलनी पड़ी। कई सीटों पर टिकट बंटवारे की नाराजगी मतदान की तारीख तक भी दूर नहीं हो पाई। कार्यकर्ताओं के अलावा सवर्ण मतदाताओं का विरोध भी कुछ सीटों पर देखने को मिला। कुल मिलाकर कहा जाए तो बीजेपी इस चुनाव में केवल उन मुद्दों के भरोसे रही, जो आम जनता से कोसों दूर थे।

मंगलवार को घोषित हुए चुनाव नतीजों के साथ ही 18वीं लोकसभा की स्थिति साफ हो गई है। बीजेपी के नेतृत्व वाले एनडीए को जहां स्पष्ट बहुमत मिला है, वहीं विपक्षी गठबंधन इंडिया ने भी 200 से ऊपर सीटें हासिल कर जबरदस्त वापसी की है। हालांकि, एग्जिट पोल के नतीजों के उलट बीजेपी को सीटों का नुकसान हुआ है।

इस बार एग्जिट पोल के नतीजे फेल हो गए हैं। 1 जून को जब एग्जिट पोल के नतीजे आने शुरू हुए तो किसी को अंदाजा नहीं था कि एग्जिट पोल में बीजेपी और एनडीए को इतना भारी बहुमत मिलेगा। ज्यादातर एग्जिट पोल ने एनडीए को 350 से ऊपर सीटें दी। कई एग्जिट पोल के नतीजों में तो एनडीए को 400 का आंकड़ा छूते हुए बताया गया। ठीक इसी तरह तीन दिन बाद मंगलवार को आए चुनाव नतीजों ने भी हर किसी को हैरान कर दिया है। मतगणना के आंकड़े देखें, तो बीजेपी को बहुत बड़ा झटका लगा है। उत्तरप्रदेश, पश्चिम बंगाल, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में बीजेपी बुरी तरह पिछड़ी है। वहीं, कांग्रेस, समाजवादी पार्टी सहित विपक्ष के कई दलों ने जबरदस्त वापसी की है। पिछले दो महीनों में बीजेपी और एनडीए में उसके सहयोगी दलों का चुनाव प्रचार देखें, तो एक बात साफ तौर पर नजर आती है कि इन्होंने केवल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के चेहरे पर चुनाव लड़ा। चुनावी रैलियों और सभाओं में पार्टी के छोटे-बड़े सभी नेता स्थानीय मुद्दों से बचते हुए नजर आए। पूरा प्रचार केवल और केवल पीएम मोदी के करिश्मे पर टिका था। बीजेपी के प्रत्याशी और कार्यकर्ता भी जनता से कनेक्ट नहीं हो पाए, जिसका खामियाजा पार्टी को भुगतना पड़ा। दूसरी तरफ, विपक्ष लगातार महंगाई और बेरोजगारी जैसे मुद्दों के जरिये सरकार के प्रति नाराजगी को जोर-शोर से उठाता रहा।

लोकसभा चुनाव के नतीजे इस बात के भी संकेत दे रहे हैं कि कई बड़े मुद्दों पर बीजेपी को अपने ही वोटर्स की नाराजगी झेलनी पड़ी। अग्निवीर और पेपर लीक जैसे मुद्दे साइलेंट तौर पर बीजेपी के खिलाफ काम करते रहे। वोटर्स के बीच सीधा मैसेज गया कि सेना में चार साल की नौकरी के बाद उनके बच्चों का भविष्य क्या होगा? पेपर लीक के मुद्दे पर युवाओं की नाराजगी को समझने में बीजेपी ने चूक की। पुलिस भर्ती परीक्षा के मुद्दे पर यूपी के लखनऊ में हुआ भारी विरोध प्रदर्शन इसका गवाह है। पार्टी के नेता यह मान बैठे थे कि केवल नारेबाजी से वो अपने समर्थकों और वोटर्स को खुश कर सकते हैं।

इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि महंगाई के मुद्दे ने इस चुनाव पर बहुत ही गहरा असर डाला। पेट्रोल-डीजल से लेकर खाने-पीने की चीजों पर लगातार बढ़ रही महंगाई ने सरकार के खिलाफ एक माहौल पैदा किया। विपक्ष इस मुद्दे के असर को शायद पहले ही भांप गया था, इसलिए उसने हर मंच से गैस सिलेंडर सहित रसोई का बजट बढ़ाने वाली दूसरी चीजों की महंगाई को मुद्दा बनाया। कांग्रेस सांसद राहुल गांधी ने बढ़ती महंगाई के लिए आर्थिक नीतियों को जिम्मेदार ठहराते हुए कई बार प्रधानमंत्री मोदी पर सीधा हमला बोला। दूसरी तरफ, बीजेपी नेता और केंद्र सरकार के मंत्री महंगाई के मुद्दे पर केवल आश्वासन भरी बातें करते हुए नजर आए।

2024 के इस लोकसभा चुनाव में बेरोजगारी के मुद्दे ने एक बड़े फैक्टर के तौर पर काम किया। विपक्ष ने हर मंच पर सरकार को घेरते हुए बेरोजगारी के मुद्दे पर जवाब मांगा। यहां तक कि कांग्रेस ने अपने घोषणा पत्र में वादा कर दिया कि अगर उनकी सरकार केंद्र में बनती है, तो तुरंत 30 लाख सरकारी नौकरियां दी जाएंगी। मंगलवार को घोषित चुनाव नतीजे साफ तौर पर संकेत दे रहे हैं कि राम मंदिर, सीएए लागू करने की घोषणा और यूनिफॉर्म सिविल कोड जैसे मुद्दे भी बीजेपी को बेरोजगारी के खिलाफ बने माहौल के नुकसान से नहीं बचा पाए।

बीजेपी को इस चुनाव में स्थानीय स्तर पर भी भारी नाराजगी झेलनी पड़ी। कई सीटों पर टिकट बंटवारे की नाराजगी मतदान की तारीख तक भी दूर नहीं हो पाई। कार्यकर्ताओं के अलावा सवर्ण मतदाताओं का विरोध भी कुछ सीटों पर देखने को मिला। कुल मिलाकर कहा जाए तो बीजेपी इस चुनाव में केवल उन मुद्दों के भरोसे रही, जो आम जनता से कोसों दूर थे।

क्यों किसी पार्टी को सिर पर नहीं बिठाता उत्तरप्रदेश?

यह यूपी है, जो सियासी तौर पर देश का सबसे मुखर राज्य भी है। कभी यहां के सियासी सन्नाटे के भीतर बहुत कुछ पक रहा होता है तो ये कभी खुलेआम किसी पार्टी के पक्ष में फैसला सुना देता है। वैसे यूपी का सियासी इतिहास है कि यह जिस भी पार्टी को अकूत सीटें और वोट देकर सिर पर बिठाता है, उसे उतार भी देता है।

चंद महिने पहले अयोध्या में जिस राम मंदिर की भव्य प्राण प्रतिष्ठा हुई, जिसके इर्द-गिर्द की राजनीति बीजेपी पिछले ढाई दशकों से कर रही थी। वहां की फैजाबाद संसदीय सीट से बीजेपी हार गई है। बनारस का यह मूड नजर आया कि जहां जोशोखरोश से काशी विश्वनाथ का मंदिर और कॉरीडोर बना, वहां प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को मिले वोट कम हो गए। यह वह यूपी है जिसने इस चुनाव में बीजेपी को पांच साल पहले की तुलना में आधी सीटों पर समेटने का बिगुल बजा दिया। यह यूपी है, जो सियासी तौर पर देश का सबसे मुखर राज्य भी है। कभी यहां के सियासी सन्नाटे के भीतर बहुत कुछ पक रहा होता है तो ये कभी खुलेआम किसी पार्टी के पक्ष में फैसला सुना देता है। वैसे यूपी का सियासी इतिहास है कि यह जिस भी पार्टी को अकूत सीटें और वोट देकर सिर पर बिठाता है, उसे उतार भी देता है। यूपी का यह सियासी तेवर और मूड आज से नहीं बल्कि 1952 में तब से है जब भारतीय लोकतंत्र की शुरुआत हुई। लिहाजा जो भी पार्टियां यूपी को अपने साथ मानती हैं और सोचती हैं कि यह तो अब उनकी लहर पर सवार है तो यह तुरंत उनकी इस खामख्याली को सुधार देता है।

जिस जमाने में नेहरू की तूती बोलती थी, उस जमाने में उत्तरप्रदेश ने उन्हें झटका दे दिया था। जब देश के दूसरे सूबे कांग्रेस के साथ खड़े दिखते थे, तब भी यूपी ने अलग बिगुल बजाया था। आपातकाल के बाद देश में अगर इंदिरा गांधी के खिलाफ अगर किसी राज्य ने सबसे ज्यादा गुस्सा दिखाया था तो भी यह उतरप्रदेश था और जब उन्हीं इंदिरा की हत्या हुई तो सहानुभूति से उपजी लहर में रिकॉर्ड सीटें जिताने का काम भी इस सूबे ने किया। जब वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव हुए तो बीजेपी को 71 सीटें दिलाकर केंद्र में उसकी सरकार बनवाने का काम भी यूपी से ही हुआ। यह उत्तर प्रदेश का इतिहास है कि वो दलों को तोलता मोलता है। तब रिजल्ट सुनाता है। यह कहना चाहिए कि नेहरू से लेकर मोदी तक इस प्रदेश ने उन्हें सिर पर बिठाया लेकिन उन्हें नसीहत भी भरपूर दी। आइए देखते हैं कि यूपी किस तरह अपना मूड बदलता रहा है- 1952 का चुनाव– देश को नई नई आजादी मिली थी। देश में नई उमंग थी। पहली बार 1952 में तब देश में पहले चुनाव हुए। सीटों के लिहाज से सबसे बड़ा सूबा उत्तरप्रदेश. जिसकी 86 सीटों के लिए चुनाव हुए। तब कांग्रेस ने 81 सीटें जीतीं। दूसरा कोई भी दल उसके आसपास नहीं था। नेहरू तब जननायक थे।

1957 का चुनाव– दूसरा लोकसभा चुनाव आते आते यूपी में बदलाव की बयार कुछ हद तक दिखने लगी थी। अबकी बार एक झटके में जनता ने कांग्रेस की 11 सीटें उस दौर में हरा दीं, जबकि पूरे देश में अब भी नेहरू का जबरदस्त क्रेज था। कांग्रेस को 70 सीटें मिलीं तो जनसंघ को 02 सीटें।

1962 का चुनाव– दो चुनावों के बाद साफ तौर पर यूपी का चुनावी मूड बदला हुआ था। तीसरे लोकसभा चुनाव आते आते यूपी ने अपना सियासी मूड और बदल दिया। देश अगर अभी भी कांग्रेस के साथ खड़ा दिख रहा था तो यूपी में कांग्रेस की सीटें और घटकर 62 रह गईं जबकि जनसंघ को 07 सीटें मिलीं।

1967 का चुनाव– यह चुनाव इसलिए अलग था क्योंकि नेहरू के निधन के बाद सहानुभूति कांग्रेस और उनकी बेटी इंदिरा गांधी के लिए दीख रही थी। इसी वजह से 85 लोकसभा सीटों पर कांग्रेस ने 73 सीटें जीतीं। साथ ही भारतीय जनसंघ 12 सीटें जीतकर और मजबूत हुआ।

1971का चुनाव– अबकी बार इंदिरा गांधी ने कांग्रेस को तोड़कर कांग्रेस एस बना ली थी। तो यूपी ने पुरानी कांग्रेस को खारिज कर दिया और वह इंदिरा गांधी की नई कांग्रेस के साथ खड़ी नजर आई। उसने इंदिरा की कांग्रेस को छप्पर फाड़ 73 सीटें दीं। जनसंघ को 04 सीटें मिलीं।

1977 का चुनाव– यूपी आपातकाल लगने से उबल रहा था। इंदिरा गांधी के प्रधानमंत्रित्व काल को लेकर बहुत गुस्सा था। इंदिरा ने जो ज्यादतियां कीं, अबकी बार यूपी उसका हिसाब बराबर करने के लिए तैयार था और उसने इस कदर यह हिसाब बराबर किया कि हर कोई हैरान रह गया। आजादी के बाद पहली बार कांग्रेस को कोई सीट नहीं मिली, उसका खाता तक नहीं खुल सका। चुनावों से ठीक पहले बनी नई जनता पार्टी ने पूरी 85 सीटों पर कब्जा किया।

1980 का चुनाव– जनता पार्टी अपनी गलतियों से केवल ढाई साल में गिर गई तो देश में मध्यावधि चुनाव हुए। यूपी फिर इंदिरा गांधी के साथ खड़ा नजर आया। 85 सीटों पर कांग्रेस ने 50 सीटें जीतीं तो जनता पार्टी सेकुलर ने 29 सीटें।

1984 का चुनाव– इंदिरा गांधी की हत्या के बाद सहानुभूति लहर से उत्तर प्रदेश भी अछूता नहीं रहा. उसने 85 में 83 सीटें जीतीं तो बीजेपी का खाता भी नहीं खुल पाया. इतनी जबरदस्त जीत तो कांग्रेस को तब भी नहीं मिली थी, जब नेहरू के दौर में उसने पहला चुनाव लड़ा था.

1989 का चुनाव– इस बार फिर यूपी का मूड बदला हुआ था। उसने अगर पांच साल पहले कांग्रेस को सिर पर बिठाया था, तो इस बार बिल्कुल ही गिरा दिया। 85 में 15 सीटें केवल कांग्रेस को मिलीं। बीजेपी को 08 सीटें हासिल हुईं तो वीपी सिंह की अगुवाई में बने जनता दल ने 54 सीटें जीतीं।

1991 का चुनाव– पहली बार सूबे ने बीजेपी का उभार देखा। उसने पहली बार 51 सीटें जीतीं और अपना आगाज किया। इस बार कांग्रेस को केवल 05 सीटें मिलीं, जो उसका खराब प्रदर्शन कहा जाएगा। जनता दल को 22 सीटें मिलीं।

1996 का चुनाव– कांग्रेस फिर 05 सीटों पर सिमटी रही तो बीजेपी ने 52 सीटों पर जीत हासिल की। समाजवादी पार्टी 16 तो बीएसपी ने 06 सीटों पर जीत पाई। लेकिन इस चुनाव ने यह भी दिखाया कि यूपी अब नई तरह की क्षेत्रीय पार्टियों के साथ खड़ा हो रहा है।

1998 का चुनाव– कांग्रेस को कोई सीट नहीं मिली, तो बीजेपी को 57 सीटें हासिल हुईं। समाजवादी पार्टी को 20 सीटें और बीएसपी की 4 सीटों पर जीत मिली।

1999 का चुनाव– कांग्रेस ने अपना आंकड़ा शून्य से 10 तक पहुंचाया तो बीजेपी के खाते में 29 सीटें आईं यानी इस बार उसे 28 सीटों का नुकसान हुआ, समाजवादी पार्टी इस बार 35 सीटों के साथ सबसे आगे रही। बीएसपी को 14 सीटें मिलीं।

2004 का चुनाव– उत्तराखंड बनने के बाद पहली बार यूपी में 80 लोकसभा सीटों के लिए चुनाव हुए, जिसमें कांग्रेस को 09 सीटें मिलीं तो बीजेपी को 10 सीटें। इस बार समाजवादी पार्टी ने 35 तो बीएसपी ने 19 सीटें पाईं। अगर आप देखें तो यह चुनाव फिर दिखा रहा है कि सूबे का सियासी मूड बदला हुआ है।

2009 का चुनाव– यूपी में कांग्रेस ने खुद बेहतर करते हुए 22 सीटों पर जीत हासिल की। इस बार के परिणाम बीजेपी के लिए वैसे ही रहे यानी 10 सीटें उसे मिलीं तो समाजवादी पार्टी को 22 सीटें हासिल हुईं और बीएसपी को 20 सीटें, लेकिन यह आखिरी चुनाव था जबकि कांग्रेस दहाई तक पहुंच पाई, इसके बाद इस सियासी पार्टी को उस सूबे में सीटों के लिए तरसना पड़ गया, जिसने वाकई उसे सिर आंखों पर बिठाया था।

2014 का चुनाव– यह वो चुनाव था जिसने यूपी में बीजेपी का परचम लहराया और देश में सियासी बदलाव पर मुहर लगा दी। कांग्रेस और अन्य दलों का सूपड़ा काफी हद तक साफ हो गया। बीजेपी ने 71 सीटें जीतीं तो समाजवादी पार्टी को 05 सीटें मिलीं तो कांग्रेस को केवल दो सीटें।

2019 का चुनाव– बीजेपी की इस बार 09 सीटें कम तो हुईं लेकिन तब भी वह 80 लोकसभा सीटों में 62 सीटें जीतकर सबसे आगे थी। कांग्रेस को केवल एक सीट हासिल हुई। बीएसपी ने 10 पर जीत पाई तो समाजवादी पार्टी ने 05सीटें पाईं।

नहीं चला राम मंदिर का मुद्दा... यूपी में आखिर कैसे पिछड़ गई बीजेपी

लोकसभा चुनाव की घोषणा होने से पहले और आखिरी चरण की वोटिंग तक राम मंदिर की काफी चर्चा हुई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ समेत बीजेपी के तमाम बड़े नेता राम मंदिर का जिक्र कर रहे थे। बीजेपी को राम मंदिर के उद्घाटन से न केवल यूपी बल्कि देश के कई हिस्सों में बढ़त मिलने की उम्मीद थी। मंगलवार लोकसभा चुनाव नतीजों के ठीक पहले 400 पार की बात हो रही थी, लेकिन नतीजों के दिन मंगलवार को एनडीए और इंडिया के बीच कांटे का मुकाबला दिखा। एनडीए को भले ही बहुमत मिला, लेकिन अकेले बीजेपी बहुमत से दूर रही है। अकेले बीजेपी के बहुमत से दूर होने के पीछे एक बड़ा कारण सबसे बड़े राज्य यूपी में उसका प्रदर्शन है। यहां बीजेपी ने सभी सीटों को जीतने का टारगेट रखा था और उसे उम्मीद थी कि इस बार राम मंदिर के सहारे वह ऐसा कर पाएगी। लेकिन जैसे-जैसे वोटों की गिनती आगे बढ़ी ऐसा हो नहीं पाया। 22 जनवरी राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के दिन सबसे बड़ा मुद्दा बना था विपक्ष के नेताओं का उस कार्यक्रम में न जाना। कांग्रेस, समाजवादी पार्टी समेत विपक्ष के बड़े नेताओं ने जब इस कार्यक्रम से दूरी बनाई तो इसको लेकर बीजेपी की ओर से उन पर काफी हमला बोला गया। उत्तरप्रदेश के बाराबंकी में चुनावी सभा के दौरान पीएम नरेंद्र मोदी ने चुनावी मंच से सपा, कांग्रेस और इंडिया गठबंधन पर जमकर निशाना साधा था। मोदी ने मंच से संबोधन में कहा था कि सपा-कांग्रेस वाले सरकार में आए तो राम मंदिर पर बुलडोजर चलवा देंगे। सपा कांग्रेस वाले अगर सरकार में आए तो रामलला को फिर से टेंट में भेज देंगे और राम मंदिर पर बुलडोजर चलवा देंगे। वहीं यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ न केवल यूपी बल्कि देश के दूसरे हिस्सों में जहां भी प्रचार करने गए वहां उन्होंने यही कहा कि जो राम को लाए हैं, जनता उनको लाएगी। फिलहाल जो नतीजे सामने आ आए हैं उसमें बीजेपी के लिए वैसी बात नहीं दिखी। इसमें कोई दो राय नहीं कि 22 जनवरी राम मंदिर के प्राण प्रतिष्ठा के दिन देश में एक अलग ही माहौल नजर आ रहा था। सिर्फ अयोध्या, यूपी ही नहीं पूरे देश में जश्न का माहौल था। दिन बड़ा भी था क्योंकि राम मंदिर का सपना पूरा हो रहा था। उस दिन जो लहर नजर आ रही थी उसके बाद बीजेपी की ओर से यूपी समेत पूरे देश में जबर्दस्त लहर बनाने की कोशिश की गई। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के बाद दो महीने तक बारी-बारी से बीजेपी की राज्य सरकारों के मंत्रिमंडल के साथ-साथ तमाम वीआईपी लोगों का अयोध्या जाने का सिलसिला जारी रहा। पूरी कवायद इस बात की थी कि राज्य में चुनाव तक राम मंदिर का मुद्दा एक दिन के लिए भी ठंडा न पड़ने पाए। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी लंबे समय तक प्रदेश में डेरा डाले रहे। अयोध्या में रोड शो भी किया लेकिन इसका असर होता नहीं दिखा है। राम मंदिर का मुद्दा बीजेपी के लिए लंबे समय से था। केंद्र में जब नरेंद्र मोदी की अगुवाई में बीजेपी की सरकार बनी तब यह सवाल और भी तेजी से भी पूछा जाने लगा कि मंदिर कब बनेगा। मंदिर वहीं बनाएंगे, तारीख नहीं बताएंगे... इसके जरिये बीजेपी पर तंज कसा जा रहा था।

क्या लौट आया गठबंधन सरकारों का दौर ?

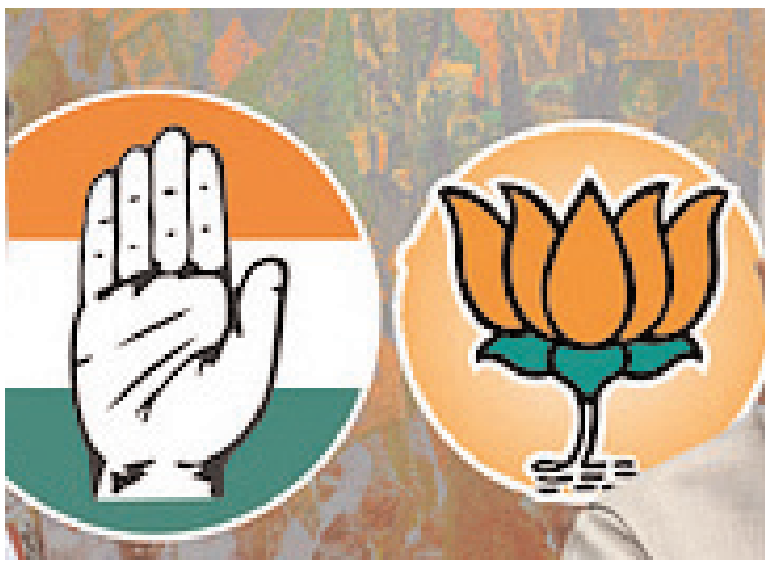

एग्जिट पोल एकबार फिर गलत साबित हुए हैं और लोकसभा चुनाव में देश की तस्वीर साफ हो गई है। किसी भी अकेले दल को पूर्ण बहुमत नहीं मिला है। भारतीय जनता पार्टी सबसे बड़े दल के रूप में उभरी है। भाजपा करीब 240 से अधिक सीटें अकेले दम पर लेकर आई है। उसके नेतृत्व में राष्ट्रीय लोकतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) ने 290 से अधिक सीटों के साथ बहुमत हासिल किया है, लेकिन कांग्रेस नेतृत्व वाले इंडी गठबंधन ने भी बेहद मजबूती से चुनाव लड़ा है। कांग्रेस अपने दम पर 100 सीटें लाई है। यूपी में समाजवादी पार्टी ने बड़ा उलटफेर करते हुए 35 से अधिक सीटों पर बढ़त बनाई । पश्चिम बंगाल में तृणमूल कांग्रेस ने एकतरफा जीत दर्ज की है।

भारतीय जनता पार्टी को सबसे अधिक नुकसान उत्तरप्रदेश, राजस्थान और पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में हुआ है, जहां पार्टी को उम्मीद थी कि इस बार फिर वो करिश्माई प्रदर्शन दोहराएगी। पार्टी ने हरियाणा और कर्नाटक में भी अच्छा प्रदर्शन नहीं किया है। इन्हीं राज्यों के कारण भारतीय जनता पार्टी अपने अकेले के दम पर पूर्ण बहुमत नहीं ला पाई है।

हालांकि, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, गुजरात, बिहार, आंध्रप्रदेश, तेलंगाना, झारखंड, छत्तीसगढ़, असम, उत्तर पूर्व के राज्यों में पार्टी में अच्छा प्रदर्शन किया है। केरल में भी अपना खाता खोल लिया है, लेकिन तमिलनाडु में पार्टी को निराश होना पड़ा है, जहां लंबे समय से पार्टी अपने संसाधन झोंकती आ रही है।

दूसरी ओर, इंडी गठबंधन ने यूपी, तमिलनाडु, राजस्थान, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल, पंजाब जैसे राज्यों में बेहतरीन प्रदर्शन किया है, जिसकी उम्मीद किसी को नहीं थी। विशेष का उत्तरप्रदेश में यही माना जा रहा था कि भारतीय जनता पार्टी वर्ष 2019 के प्रदर्शन को दोहराएगी।

पहले चरण के समय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने विकास के नाम पर चुनाव लड़ा, लेकिन जैसे ही कम वोटिंग हुई तो दूसरे चरण से विकास का मुद्दा छोड़कर मोदी हिंदुत्व, कांग्रेस की कमजोरी, इंडी गठबंधन, मुस्लिम तुष्टीकरण, संपत्ति के बंटवारे जैसे मुद्दे पर उतर आए। दूसरे से सातवें चरण तक आते-आते चुनाव बेहद आरोप-प्रत्यारोपों में बदलता दिखा।

नरेंद्र मोदी ने चुनाव से पहले 400 पार का नारा दिया था और अब लग रहा है कि यही नारा पार्टी के गले की फांस बना, क्योंकि भाजपा के कई नेताओं ने 400 पार के नारे को संविधान से जोड़ दिया और यहां तक कह दिया कि पार्टी संविधान बदलेगी। इसी मुद्दे को इंडी गठबंधन ने जोर-शोर से पूरे चुनाव में पकड़े रखा। खासकर उत्तरप्रदेश जैसे राज्य में समाजवादी पार्टी और कांग्रेस ने जनता को यह विश्वास दिलाया कि अगर तीसरी बार मोदी प्रधानमंत्री बने तो संविधान बदल देंगे, आरक्षण खत्म कर देंगे, तानाशाही आ जाएगी।

उत्तरप्रदेश में भारतीय जनता पार्टी की नुकसान का बड़ा कारण मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को लेकर विपक्ष का फैलाया भ्रम भी रहा, जिसमें विपक्ष बार-बार यह कह रहा था कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमित शाह योगी आदित्यनाथ को मुख्यमंत्री पद से हटाना चाहते हैं। शायद जनता को यह बात स्वीकार नहीं हुई। यूपी में जिस तरीके से पिछले 7 सालों से योगी आदित्यनाथ कानून व्यवस्था के मुद्दे पर आगे बढ़ रहे हैं तो उनकी छवि एक राष्ट्रीय नेता की हो गई है। योगी आदित्यनाथ को महिलाओं का भरपूर समर्थन मिला है, लेकिन अब लोकसभा चुनाव के नतीजे बता रहे हैं कि जनता में कहीं न कहीं यह बात घर कर गई है कि योगी आदित्यनाथ को हटा सकते हैं।

भाजपा से कहीं न कहीं प्रत्याशियों के चयन में भी चूक हुई है। खासकर उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र जैसे राज्यों में पार्टी ने अपने पुराने चेहरों पर ही दांव लगाया। उत्तर प्रदेश में तो बाहर से आए नेताओं को भी टिकट दिए गए। फिर जिस तरह से कांग्रेस के नेताओं ने लाइन लगाकर भाजपा ज्वाइन की, उससे भी पार्टी कार्यकर्ताओं में निराशा फैली।

पहले चरण से ही दिख रहा था कि पार्टी कार्यकर्ता उस जोश से चुनाव में नहीं लगे हैं, जैसा 2014 और 2019 में देखने को मिला था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की भूमिका में भी यही देखने को मिला, क्योंकि चुनाव में संघ भी उस तरीके से जमीन पर नजर नहीं आया, जैसा पिछले दो चुनाव में दिखा था।

कांग्रेस इस बार विपक्षी दलों को एकजुट रखने में कामयाब रही। ममता बनर्जी को छोड़ दें तो इंडी गठबंधन में अपने-अपने राज्यों में सहयोगी दलों को सीटें दीं। भले पंजाब में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस आमने-सामने थे, लेकिन कांग्रेस यहां शुरू से मजबूत नजर आई। राहुल गांधी के साथ उनकी बहन प्रियंका गांधी ने भी जोर-शोर से प्रचार किया।

इंडी गठबंधन के सभी सहयोगी दल, विशेष कर समाजवादी पार्टी के अखिलेश यादव, राजद के तेजस्वी यादव हिंदी पट्टी में पूरे जोश खरगोश के साथ चुनाव में जुटे और सबने मिलकर बड़ी रैलियां कीं। यदि किसी भी दल को पूर्ण बहुमत नहीं मिलता है तो एकबार फिर जोड़-तोड़ की राजनीति शुरू होगी। फिलहाल यही लग रहा है कि भाजपा के नेतृत्व में सरकार का गठन होगा, क्योंकि सबसे बड़ा दल वही है, लेकिन जनता दल (यू) की जो छवि रही है, वह इधर से उधर जाने की है, तेलुगू देशम पार्टी भी आंध्रप्रदेश में अच्छी सीटें लेकर आई है। अभी से ऐसी खबरें आ रही हैं कि इंडी गठबंधन एनडीए के दलों पर डोरे डाल रहा है। अगले दो-तीन दिन बेहद उतार-चढ़ाव के रहने वाले हैं। अंतिम सवाल, क्या यह माना जाए कि दोबारा से गठबंधन की सरकारों का दौर शुरू हो गया है?

नेटिजन्स को ताहा शाह में दिखी सुशांत सिंह की झलक

अभिनेता बोले- मुझे पता है आउटसाइडर का दर्द

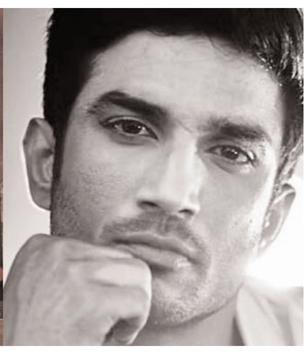

बॉलीवुड में नाम कमाना और उस कमाए हुए नाम को बरकरार रखना बहुत बड़ी बात है। खासकर जब आप इंडस्ट्री के बाहर से आते हैं। आउटसाइडर के लिए बॉलीवुड में ब्रेक मिलना ही बहुत बड़ी बात होती हैं, लेकिन फिर भी फिल्म इंडस्ट्री के कुछ बड़े नाम इन्हीं आउटसाइडर में से आते हैं। हीरामंडी में अहम भूमिका निभा चुके ताहा शाह भी इन्हीं आउटसाइडर की लिस्ट में शामिल हैं। हाल ही में नेटिजन्स ने उन्हें एक नया नाम और टैग दिया है चलिए जानते हैं इस पर अभिनेता ने क्या कहा है। हीरामंडी स्टार ताहा शाह इन दिनों सुर्खियों में बने हुए हैं। दर्शकों को हीरामंडी में उनका काम काफी पंसद आया है। इस शो में सोनाक्षी सिन्हा और मनीषा कोइराला जैसे कलाकारों के साथ नजर आए। हीरामंडी के बाद उन्हें नेटिजन्स ने पहले नेशनल क्रश का टैग दिया था। ताहा शाह अपनी इस सफलता से खुश नजर आ रहे हैं। ताहा शाह ने अपने करियर की शुरुआत यशराज फिल्म्स की फिल्म लव का द एंड से किया था। इस फिल्म में वे श्रद्धा कपूर के साथ नजर आए थे, लेकिन उन्हें वह सफलता नहीं मिली जो हीरामंडी से मिली है। अब नेटिजन्स उन्हें नया सुशांत सिंह राजपूत कह रहे हैं। नेटिजन्स को लगता है कि ताहा भी सुशांत की तरह ही इंडस्ट्री के बाहर से आए हैं और अपना नाम बना रहे हैं। ताहा शाह सुशांत सिंह राजपूत से अपनी तुलना किए जाने को लेकर काफी खुश हैं। अभिनेता ने कहा, मैं निजी तौर पर सुशांत सिंह राजपूत को जानता था। मैंने उनके संघर्षों को देखा है और मैं खुश हूं कि लोगों को मुझ में उनकी झलक दिख रही है। ताहा शाह अपनी बात जारी रखते हुए कहते हैं, मैं जानता हूं एक आउटसाइडर के लिए यहां काम कर पाना कितना कठिन होता है। मुझे लोगों ने मैसेज किया कि उन्हें मुझे देखकर सुशांत की याद आई। मैं बता नहीं सकता हूं कि मुझे कितना अच्छा लगा यह सुनकर। मैं कोशिश करूंगा कि मैं उनकी विरासत को आगे ले जा सकूं और दर्शक मुझे भी वही प्यार दें जो उन्होंने सुशांत सिंह को दिया था।

भारत लौटने पर दोस्तों से मिल रही हैं मीनाक्षी सबसे पहले इस बड़े अभिनेता से हुई मुलाकात

घातक, घायल, दामिनी, डकैत और घर हो तो ऐसा समेत कई फिल्मों में काम करने वाली अभिनेत्री मीनाक्षी शेषाद्रि एक बार फिर से सुर्खियों में हैं। मीनाक्षी लंबे समय से फिल्मों से दूर है। दरअसल, हरीश मैसूर से शादी करने के बाद मीनाक्षी अमेरिका चली गई थीं और अब भारत वापस आने के बाद वो इंडस्ट्री में अपने दोस्तों से मिलने-जुलने में लगी हुई हैं। मीनाक्षी शेषाद्रि ने हालिया साक्षात्कार में बताया कि उन्होंने भारत लौटने पर क्या-क्या किया। उन्होंने कहा कि जब उन्होंने अपने करियर की शुरूआत की थी तो वो लोगों से यादा मिलती-जुलती नहीं थीं। उन दिनों वो दोस्त बनाने में यकीन नहीं रखती थीं। हालांकि, अब इस चीज को लेकर उनमें नया बदलाव आ चुका है। मीनाक्षी अब अपने पुराने दोस्तों से मिलना चाहती हैं और भारत आने के बाद उन्होंने यही किया।मीनाक्षी ने बताया कि जब वो वापस लौटीं तो सबसे पहले जैकी श्रॉफ से मिली। मीनाक्षी ने कहा कि जैकी उन्हें कई फिल्म कार्यक्रमों में लेकर गए। मालूम हो कि दोनों ने एक साथ हीरो फिल्म में काम किया था और मीनाक्षी इस फिल्म के बाद स्टार बन गई थीं। परदे पर दोनों की जोड़ी काफी हिट रही थी। आमतौर पर ऐसा होता है कि जोड़ी हिट होने के बाद कई फिल्मों में काम करने का मौका मिलता है और फिल्में भी खूब चलती हैं, लेकिन मीनाक्षी और जैकी के मामले में ऐसा नहीं हुआ। इसे लेकर मीनाक्षी अफसोस भी जताती हैं। मीनाक्षी ने बताया कि इंडस्ट्री में उनकी एक और दोस्त है, जिससे वो मिलना चाहती हैं और वो है- संगीता बिजलानी।

मिस्टर एंड मिसेज माही का धमाल जारी चंद दिनों में सावि का हुआ बुरा हाल

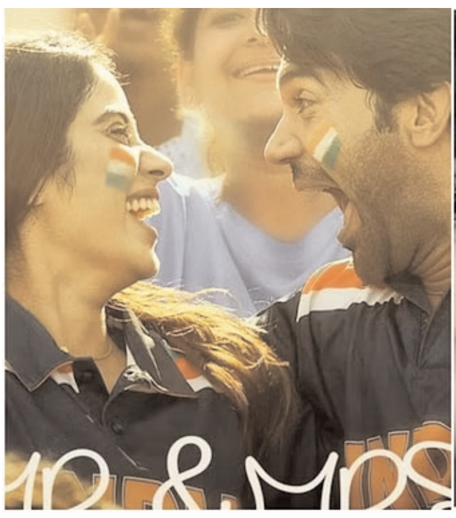

इन दिनों सिनेमाघरों में दर्शकों के मनोरंजन के लिए कई फिल्में लगी हुई है। इनमें कई फिल्में अछा प्रदर्शन कर रही हैं। तो कई का बुरा हाल हो गया है, इन फिल्मों की कमाई देख कर लग रहा है कि ये यादा दिन तक नहीं टिक पाएंगी। इन दिनों बॉक्स ऑफिस पर राजकुमार राव और जान्हवी कपूर की मिस्टर एंड मिसेज माही अछा प्रदर्शन कर रही है। इस फिल्म के अलावा दिव्या खोसला की सावि और श्रीकांत भी लगी हुई है। इन सभी फिल्मों ने मंगलवार को कैसा प्रदर्शन किया, चलिए जानते हैं...बॉलीवुड अभिनेता राजकुमार राव और जान्हवी कपूर की फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही ने इस शुक्रवार को सिनेमाघरों में दस्तक दी थी। दर्शकों को इस फिल्म का ब्रेसब्री से इंतजार था। शरण शर्मा के निर्देशन में बनी इन फिल्म की कहानी लोगों को पसंद आ रही है। मिस्टर एंड मिसेज माही का निर्माण अपूर्व मेहता, हीरू यश जौहर और करण जौहर ने किया है। फिल्म पहले दिन से अछा कलेक्शन कर रही है।मिस्टर एंड मिसेज माही में जान्हवी कपूर और राजकुमार राव ने पति-पत्नी का किरदार निभाया है। पर्दे पर दोनों की केमिस्ट्री लोगों को खूब पसंद आ रही है। 40 करोड़ के बजट में बनी इस फिल्म की कमाई की बात करें तो फिल्म ने पांचवें दिन 2.10 करोड़ रुपये की कमाई की है। इसी के साथ ही फिल्म की कुल कमाई 21.10 रुपये हो गई है।1अभिनेता राजकुमार राव की फिल्म श्रीकांत को रिलीज हुए एक महीना पूरा होने वाला है। फिल्म ने 10 मई को सिनेमाघरों में दस्तक दी थी। फिल्म शुरुआत से धीमी रफ्तार के साथ आगे बढ़ रही है। फिल्म की कमाई अब लाखों में सिमट के रह गई है। राजकुमार राव ने इस फिल्म में श्रीकांत की भूमिका निभाई है। 40 करोड़ रुपये के बजट में बनी ये फिल्म श्रीकांत बोला की बायोपिक है। फिल्म की कमाई की बीत करें तो श्रीकांत ने 26वें दिन 35 लाख रुपये की कमाई की है। इसी के साथ ही फिल्म की कमाई 44.95 करोड़ रुपये हो गई है।

इस दिन प्रभास की कल्कि 2898 एडी पर बड़ा खुलासा करेंगे निर्माता वीडियो साझा कर बढ़ाया उत्साह

कल्कि 2898 एडी 2024 में रिलीज होने वाली सबसे बहुप्रतीक्षित फिल्मों में से एक है और इसने दर्शकों के बीच काफी उत्साह पैदा किया है। फिल्म में शानदार स्टार कास्ट है और यह अब तक बनी सबसे महंगी भारतीय फिल्मों में से एक है। फिल्म को लेकर लगातार निर्माता प्रशंसकों के साथ नई-नई दिलचस्प जानकारियां साझा कर उनका उत्साह बढ़ा रही है। वहीं अब फिल्म के निर्माताओं ने प्रशंसकों के लिए एक और तोहफे का इंतजाम कर लिया है। वें फिल्म को लेकर बड़ी घोषणा करने की योजना बना रहे हैं।दरअसल, अब कल्कि 2898 एडी के निर्माता बड़े अपडेट के साथ फिर धमाका करने के लिए तैयार हैं। उन्होंने एक वीडियो क्लिप साझा करते हुए इस बात की जानकारी दी। निर्माताओं ने सोशल मीडिया पर एक जीआईएफ वीडियो साझा किया, जिसमें फिल्म का दृश्य है। पोस्ट साझा करते हुए निर्माताओं ने बताया कि कल यानी बुधवार को सुबह 10 बजे बड़ी जानकारी का खुलासा होगा। वहीं, अब प्रशंसकों का कहना है कि यह बड़ी जानकारों फिल्म के थिएट्रिकल ट्रेलर के बारे में होगी।ऐसा लगता है कि निर्माता फिल्म के ट्रेलर के रिलीज की तारीख से पर्दा उठाने वाले हैं। ट्रेलर के इस हफ्ते रिलीज होने की उम्मीद है। ट्रेलर के बारे में अपडेट बीते दिन ही मिल जाना चाहिए था, लेकिन निर्माताओं ने मतगणना खत्म होने का इंतजार किया, क्योंकि चुनावों के नतीजे आने तक सभी का ध्यान सिर्फ राजनीति पर ही रहेगा। वहीं, निर्माताओं ने चुनावी खेल खत्म होने के बाद अपडेट साझा करने का फैसला किया है।ट्रेलर लॉन्च के अलावा निर्माता देश भर में कार्यक्रम आयोजित करने की योजना बना रहे हैं। सोशल मीडिया पर पहले खबरें आईं कि फिल्म का ट्रेलर इस हफ्ते सात जून को मुंबई में रिलीज किया जाएगा। इससे पहले निर्माताओं ने फिल्म के नए सदस्य और प्रभास के सबसे अछे दोस्त बुजी से फैंस की मुलाकात करवाई थी। निर्माताओं ने हाल में ही फिल्म से जुड़ी एक एनिमेटेड सीरीज लॉन्च की है। इस एनिमेटेड सीरीज में फिल्म में नजर आने वाले बुजी और भैरव से परिचय कराया गया है।कल्कि 2898 एडी एक साइंस फिक्शन फिल्म है, जो हिंदू पौराणिक कथाओं पर आधारित है। फिल्म नाग अश्विन द्वारा लिखित और निर्देशित है। वैजयंती मूवीज द्वारा निर्मित यह फिल्म भारत की सबसे महंगी फिल्म मानी जा रही है। फिल्म के डायलॉग साई माधव बुर्रा ने लिखे हैं। संगीतकार संतोष नारायणन, छायाकार जोर्डजे स्टोजिलजकोविक और संपादक कोटागिरी वेंकटेश्वर राव तकनीकी टीम का हिस्सा हैं। वहीं, फिल्म के कलाकारों की बात करें तो नाग अश्विन द्वारा निर्देशित साइंस फिक्शन फिल्म कल्कि 2898 एडी प्रभास के साथ में कमल हासन, अमिताभ बचन, दीपिका पादुकोण, दिशा पटानी और कई अन्य कलाकार महत्वपूर्ण भूमिकाओं में हैं। यह फिल्म 27 जून को रिलीज होगी।

शाहरुख खान के साथ काम करना चाहते हैं अनुराग कश्यप, लेकिन नहीं कर पाते हिम्मत, जानें क्यों ?

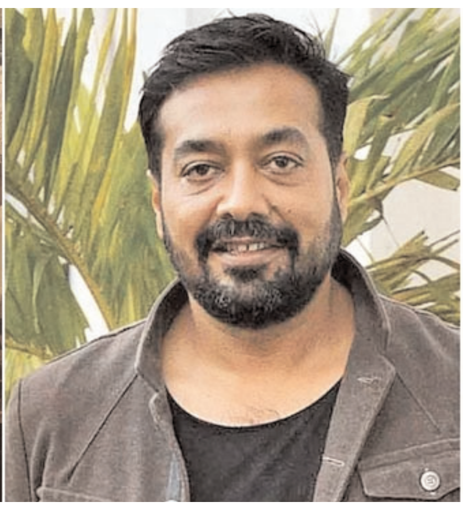

अनुराग कश्यप का फिल्म बनाने का नजरिया अलग है। वे बोल्ड विषयों पर फिल्में बनाते हैं, जो अक्सर अलग नजर आती हैं। उन्होंने अपने करियर में कई चर्चित फिल्में बनाई हैं। कई कलाकारों के साथ काम कर चुके अनुराग कश्यप बॉलीवुड के किंग शाहरुख खान के साथ काम करने से डरते हैं। हाल ही में एक इंटरव्यू के दौरान उन्होंने इसकी वजह का खुलासा किया और इसके लिए शाहरुख खान के प्रशंसकों को जिम्मेदार ठहराया है। अनुराग कश्यप ने शाहरुख खान के साथ काम नहीं करने के लिए शाहरुख खान के फैन बेस को जिम्मेदार बताया है। उन्होंने स्वीकार किया कि शाहरुख खान के साथ काम करना असंभव है। ह्यूमंस ऑफ सिनेमा से बात करते हुए अनुराग कश्यप ने खुलासा किया कि शाहरुख खान और उनके काम को पसंद करने के बावजूद वे उनके साथ काम नहीं कर सके। अनुराग कश्यप ने कहा कि वे एक बार शाहरुख के साथ फिल्म बनाना चाहते थे। किंग खान को वे पसंद भी खूब करते हैं, लेकिन वह शाहरुख के प्रशंसकों से काफी 'डरते' हैं।अनुराग कश्यप ने आगे कहा, %सोशल मीडिया के इस दौर में बड़े स्टार्स के प्रशंसकों की संख्या देखकर घबरा जाता हूं। अभिनेता प्रशंसकों की वजह से टाइपकास्ट हो जाते हैं और प्रशंसक उनसे बार-बार वही चीजें चाहते हैं। अगर ऐसा नहीं होता है, तो प्रशंसक उसे अस्वीकार कर देते हैं, इसलिए अभिनेता भी नई चीजें आजमाने से डरते।अनुराग कश्यप ने आगे कहा कि वह ऐसे व्यक्ति हैं, जो अपनी पसंद की फिल्म बनाएंगे और सिर्फ प्रशंसकों के लिए नहीं। इसलिए, वे शाहरुख के साथ काम करने से डरते हैं। अनुराग कश्यप ने कहा कि शाहरुख खान के साथ ऐसी फिल्म बनाने के नतीजे या परिणाम उन्हें बहुत महंगे पड़ सकते हैं। अनुराग कश्यप ने कहा, शाहरुख खान के ऑरा और स्टारडम को संभालना मेरे बस की बात नहीं है। अगर उनकी फिल्म फैन चलती तो मैं कह सकता था कि मुझमें भी उनके साथ काम करने की हिम्मत है।

पंचायत के 'भूषण शर्मा' का ओथेलो अवतार, प्राची पटवारी और हिमांशु राज को खूब मिली तालियां

मुंबई के नाट्य सभागारों की सप्ताहांत की शामें खूब खचाखच भरी होती हैं। नाटक देखने की इस शहर के तमाम परिवारों की परंपरा रही है। गुजराती और मराठी नाटकों में तो लोग समूहों में आते हैं। हिंदी नाटकों की भी इस शहर में अपनी अलग ही प्रतिष्ठा है। नाटक अनुशासन का काम है। महीनों के अभ्यास के बाद जब कोई नाटक मंडली पहली बार रंगमंच पर अपनी मेहनत का नतीजा जानने उतरती है तो रंगमंच के सामने और रंगमंच के पीछे तनाव एक सा होता ही है। शेक्सपियर ने यूं तो सुखांत, दुखांत, हास्य रस से भरपूर तमाम नाटक लिखे हैं लेकिन इनमें से बीते चार सौ साल से भी ज्यादा समय से उनके जो नाटक कलाकारों की तमाम पीढ़ियों के पसंदीदा रहे हैं, उनमें 'ओथेलो' का नाम सबसे ऊपर आता है। अभिनय या अंग्रेजी साहित्य से जिनका जरा सा भी नाता रहा है, वे सब 'ओथेलो' की कहानी जानते हैं। ओथेलो यानी वेनिस का वह मिलिट्री कमांडर जिसे साइप्रस की धरती पर तुर्कों के संभावित हमलने को विफल करने भेजा जाता है। नाटक उसकी शादी की खबर जानकर व्यथित रॉड्रिगो की शिकायत से शुरू होता है। रॉड्रिगो भी डेस्डेमोना से प्रेम करता है, लेकिन डेस्डेमोना ने शादी कर ली ओथेलो से। रॉड्रिगो ये शिकायत उस इयागो से कर रहा है जो ओथेलो का सबसे खास सिपहसालार है। ओथेलो का एक और खास सिपहसालार है कैसियो, जिसकी तरक्की से इयागो खुश नहीं है। इयागो को ये भी शक रहा है कि ओथेलो उसकी पत्नी एमीलिया के साथ हमबिस्तर हो चुका है। इमीलिया का काम है डेस्डेमोना की सेवा में हर पल तैनात रहना। इयागो को अब बदला लेना है। वह सारे किरदारों को अपने ताने बाने में फंसाता चलता है। चाल दर चाल वह ओथेलो के दिमाग में खुराफात भरता जा रहा है। और, ओथेलो उसकी बातों में फंसता भी जाता है।

केंद्रीय राजनीति में सुपरहिट हुए गणेश सिंह...

केंद्रीय राजनीति में सुपरहिट हुए गणेश सिंह, मंत्रिमंडल में मिल सकती है बड़ी जिम्मेदारी!

उमेश कुशवाहा । सिटी चीफ।
सतना, गणेश सिंह ने कांग्रेस प्रत्याशी सिद्धार्थ कुशवाहा को करीब 85 हजार वोटों से हरा दिया है। गणेश सिंह को करीब 4 लाख वोट मिले वहीं सिद्धार्थ कुशवाहा को तीन लाख 30 हजार वोट मिले हैं। वहीं बहुजन समाज पार्टी के नारायण त्रिपाठी को केवल डेढ़ लाख वोटों से ही संतोष करना पड़ा है। छह माह पहले मध्य प्रदेश विधानसभा चुनाव 2024 में करीब 4200 वोटों से सिद्धार्थ कुशवाहा से हार गए थे। अब लोकसभा चुनाव में गणेश सिंह ने कांग्रेस से अपनी पिछली हार का बदला ले लिया है। जीत के बाद गणेश सिंह ने कहा कि अधूरी योजनाओं को पूरा कराना और नई योजना लाकर सतना संसदीय क्षेत्र को विंध्य क्षेत्र का विकसित बनाना है।

कौन है गणेश सिंह?
गणेश सिंह सतना सीट से भारतीय जनता पार्टी के प्रत्याशी है। गणेश यहां से लगातार पांचवी बार चुनाव जीत चुके हैं। वह बीजेपी की राज्य इकाई में प्रदेश मंत्री और विधानसभा चुनाव प्रबन्ध समिति के सदस्य रह चुके हैं।

जानिए 2019 के क्या थे नतीजे- सतना की सीट पर लोकसभा चुनाव 2019 में भाजपा के गणेश सिंह ने ही जीत हासिल की थी। गणेश सिंह ने कांग्रेस के राजाराम त्रिपाठी को दो लाख 31 हजार मतों से पराजित किया था। गणेश सिंह को 588,753 वोट मिले थे जबकि राजाराम त्रिपाठी को 3,57,280 वोट मिले थे।

चार बार से है लगातार सांसद, पांचवी बार भी हुई जीत- गौरतलब है कि मध्य प्रदेश की सतना लोकसभा सीट की गिनती महत्वपूर्ण सीटों में होती है। यहां से मौजूदा सांसद गणेश सिंह लगातार चार बार यहां से सांसद चुने गए हैं। इस बार भी भाजपा ने उन पर भरोसा जताया था और वे उस पर खरे उतरे। कांग्रेस से उन्हें इस बार कड़ी टक्कर मिलने की उम्मीद की जा रही थी, लेकिन अंततः सीट भाजपा की झोली में गई।

कैबिनेट में मिल सकती है बड़ी जिम्मेदारी!- गणेश सिंह लगातार चार बार से सतना लोकसभा सीट से सांसद चुने गए हैं। और फिर पांचवी बार भी कांग्रेस प्रत्याशी सिद्धार्थ कुशवाहा को 84490 से मात दी है, साथ ही ओबीसी के बड़े चहरे माने जाते है। ऐसे में यह माना जाता है कि इतने वोटों से जीतने के बाद कैबिनेट में जगह मिलना लगभग तय है।

महात्मा गांधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय के कुलपति का एक और नया खेल सामने आया

आदिवासी मृतक छात्र मादेश जमरे मामले में आरोपी पूर्व डीन प्रो.डी.पी. राय फिर बने विश्वविद्यालय के डीन

सिटी चीफ । उमेश कुशवाहा ।
चित्रकूट, आदिवासी मृतक छात्र मादेश जमरे मामले में आरोपी पूर्व डीन प्रो.डी.पी. राय को विश्वविद्यालय प्रशासन ने डीन पद से हटा दिया गया था और नए डीन के रूप में एस.पी.मिश्रा को कार्यभार सौंपा गया था किंतु छात्रों को शांत करने के लिए यह खेल गया था क्योंकि आज आरोपी प्रो.डी.पी.राय आज पुनः कृषि संकाय के डीन की कुर्सी में फिर कब्जा कर लिया और वर्तमान के डीन को बाहर का रास्ता दिखा दिया । यहां तक कि मृतक छात्र के परिवार को अभी तक कोई वित्तीय सहायता नही दी गई साथ ही आरोपियों को विश्वविद्यालय प्रशासन पूरा संरक्षण प्रदान कर रहा है। छात्रों पर फेल करने का दबाव बनाकर यह खेल खेला जा रहा है।

आपात स्थिति से निपटने के लिए स्वास्थ्य पंडाल को मिनी अस्पताल का रूप दिया गया

मतगणना स्थल पर प्राथमिक उपचार की व्यवस्था सुनिश्चित

धीरज कुमार अहीरवाल । सिटी चीफ ।
दमोह, संसदीय क्षेत्र की मतगणना के दौरान अधिकारी कर्मचारियों और जनप्रतिनिधियों सहित मतगणना में तैनात लोगों के लिए कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी सुधीर कुमार कोचर ने पालीटेक्निक परिसर में स्वास्थ्य सुविधाओं की व्यवस्था सुनिश्चित की है। इसी क्रम में मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. सरोजनी जेम्स बैक के मार्गदर्शन में स्थानीय पालीटेक्निक परिसर में किसी भी आपात स्थिति से निपटने के लिए तथा मरीज को त्वरित रूप से उपचार प्रबंधन के लिए बनाये गये स्वास्थ्य पंडाल को मिनी अस्पताल का रूप दिया गया। पंडाल में चार डाक्टर, स्टॉफ नर्स, सपोर्ट स्टॉफ की तैनाती की गई। जिसमें जीवन रक्षक उपकरणों मसलन ई.सी.जी. सुविधा, आक्सीजन कंसन्टेटर, शुगर, बी.पी. की जांच, त्वरित रूप से दस्त प्रबंधन के लिए जीवन रक्षक तैयार ओ.आर.एस. घोल, जीवन रक्षक औषधियां जिसमें दिल की धड़कन का आसामान्य रूप से बढ़ना, अथवा बैचेनी में उपयोगी औषधियां की उपलब्धता सुनिश्चित की गई ।
भीषण गर्मी में मतगणना दौरान डियूटी पर तैनात एक कर्मी को अचानक दिल में बैचेनी घबडाहट की शिकायत होने पर ई.सी.जी.

किया गया। डियूटी पर मुस्तैदी से तैनात डॉ. राहुल जैन ने बताया कि संबंधित कर्मी बी.पी. का मरीज है दवा का सेवन न करने की वजह से उन्हे बैचेनी होने पर ई.सी.जी. किया गया। त्वरित रूप से मरीज को जिला चिकित्सालय में 108 एम्बूलेंस के जरिए रेफर किया गया। डॉ. जैन ने बताया कि गर्मी की अधिकता के कारण 10 कर्मियों ने पेट दर्द, दस्त एवं कमजोरी के कारण इनका प्राथमिक उपचार किया गया। मतगणना स्थल पर बनाये गये मिनी अस्पताल में डॉ. राहुल जैन, डॉ. मधुर चौधरी, ए.एम.ओ. रामेश्वर पटेल, ए.एम.ओ. रजनीश जैन सहित नर्सिंग आफीसर रेशमा बी, सपोर्ट स्टॉफ नरेन्द्र रैकवार, मनीष सोनी सुरक्षा कर्मी अजय अहिरवाल ने मुस्तैदी से अपनी सेवायें प्रदान की जा रही है।

कटनी के खजोराहो से वी डी शर्मा शहडोल से हिमांद्री सिंह की जीत

फटाके फोड़कर जमकर जश्न बनाया

सुनील यादव । सिटी चीफ ।
कटनी, कटनी जिले के तीन विधानसभा जो खजोराहो लोकसभा में आती है जिसमे वी डी शर्मा की जीत और जिले की एक बड़वाड़ा विधानसभा जो शहडोल लोकसभा में आती है जिसमे बीजेपी की प्रत्याशी हिमांद्री सिंह की जीत के बाद जिले के बीजेपी के वरिष्ठ कार्यकर्ता और कार्यकर्ताओं में खुशी की लहर देखी गई और बड़े ही धूमधाम के साथ ढोल नगाड़ों के धुन में थिरकते हुए दिखाई दिए वही सभी एकत्रित होते हुए विक्ट्री का चिन्ह दिखाते हुए बीजेपी की जीत का जश्न बनाया। वही जमकर फटाके भी चलाए।

भाजपा प्रत्याशी राहुल सिंह ने ऐतिहासिक जीत पर कार्यकर्ताओ का आभार जताया

ऐतिहासिक जीत पर भाजपा जिलाध्यक्ष प्रीतम सिंह ने कार्यकर्ताओं को बधाई दी

धीरज कुमार अहीरवाल । सिटी चीफ ।
दमोह, दमोह लोकसभा सीट से भाजपा प्रत्याशी राहुल सिंह की ऐतिहासिक जीत पर आभार सभा आयोजित हुई मंचाशीन भाजपा पदाधिकारियों ने भाजपा कार्यक्रताओं के जश्न और उत्साह, उनकी जीत पर पुष्प वर्षा कर जश्न मनाया गया। जिला मीडिया प्रभारी राघवेन्द्र सिंह परिहार और जिला सह मीडिया प्रभारी महेन्द्र जैन ने बताया कि भाजपा जिलाध्यक्ष प्रीतम सिंह की अध्यक्षता में आयोजित आभार सभा में पूर्व मंत्री दमोह विधायक जयंत मलैया, राज्य मंत्री लखन पटेल, धर्मेन्द्र सिंह, पूर्व मंत्री दशरथ सिंह, पूर्व सांसद चंदभान सिंह, पूर्व विधायक पी एल तंतुवाय, पूर्व जिला अध्यक्ष विद्यासागर पांडेय, नरेन्द्र व्यास के अतिथ्य में भाजपा कार्यालय में कार्यकर्ताओं ने आतिशबाजी चलाकर जीत का जश्न मनाया और एक दूसरे को मिठाई खिलाकर बधाई और शुभकामनाएं दीं। जिला अध्यक्ष प्रीतम सिंह ने सभी कार्यकर्ताओं

और मतदाताओं का हृदय से धन्यवाद ज्ञापित कर आभार जताया और बूथ से लेकर सभी कार्यकर्ताओ के अथक परिश्रम का परिणाम है कि चार लाख से अधिक से जीत हासिल हुई हैं और हम जिले के शत प्रतिशत बूथ जीते हैं। पूर्व मंत्री दमोह विधायक जयंत मलैया ने जीत का श्रेय भाजपा कार्यक्रताओं को दिया और बताया कि जब मै 1981 में भाजपा का जिला अध्यक्ष बना तो किसी को विश्वास नहीं था कि यह दल एक दिन भाजपा विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनेगी। राज्य मंत्री लखन पटेल और धर्मेन्द्र सिंह ने भी भाजपा प्रत्याशी राहुल सिंह की रिकार्ड मतों से जीत दर्ज कर इतिहास रचा उसके लिए सिर्फ़ कार्यकर्त्ता की अथक मेहनत हैं जिन्होंने चिलचिलाती धूप में भी प्रत्याशी को जिताने के लिए काम किया। इस आभार सभा में जिले की चारों विधानसभा से आए कार्यकर्ताओ, जिला पदाधिकारिओ, मंडल अध्यक्ष, मोर्चा अध्यक्ष, प्रकोष्ठ संयोजकों का आभार व्यक्त करते हुए नव निर्वाचित सांसद राहुल सिंह ने कहा कि आप सबकी मेहनत से ही मैं जीत हासिल कर सका हूं और मैं क्षेत्र के विकास और कार्यकर्ताओ के लिए हमेशा समर्पित रहूंगा और कार्य करता रहूंगा। सभा का संचालन जिला उपाध्यक्ष संजय सेन ने किया।

4 लाख से अधिक मतों से जीते भाजपा प्रत्याशी महेंद्रसिंह सोलंकी

जश्न में डूबे भाजपाई

भगवान दास बैरागी । सिटी चीफ ।
शाजापुर. लोकसभा निर्वाचन में शाजापुर-देवास संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस प्रत्याशी राजेंद्र राधाकिशन मालवीय को करारी मात देते हुए भाजपा प्रत्याशी महेंद्रसिंह सोलंकी ने ऐतिहासिक जीत दर्ज की। इस जीत के बाद जहां कांग्रेसी खेमें में मायूसी रही तो वहीं भाजपाई जश्न में डूबे रहे। 4 जून मंगलवार को सुबह ईव्हीएम मशीन ने परिणामों को उगलना शुरू किया और भाजपा प्रत्याशी सोलंकी निरंतर बढ़त बनाते हुए जीत की ओर बढ़ते रहे। शाम करीब 5 बजे सोलंकी ने कांग्रेस प्रत्याशी मालवीय को लगभग 4 लाख 7 हजार 97 वोटों से पराजित कर दिया। इस जीत पर भाजपाईयों ने ढोल-नगाड़े बजाते हुए खुशियां मनाईं। इसके बाद जिला रिटर्निंग अधिकारी एवं कलेक्टर ऋजु बाफना के द्वारा भाजपा प्रत्याशी को जीत पर प्रमाण पत्र दिया। इस दौरान सोलंकी ने कहा कि भारत को समृद्ध, शक्तिशाली, मजबूत और विकसित बनाने का काम वर्ष 2014 से ही देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी कर रहे हैं। यह उनके द्वारा किए गए विकास कार्यों का ही परिणाम है कि आज शाजापुर-देवास संसदीय क्षेत्र से दोबारा रिकार्डतोड़ जीत मिली है। सोलंकी ने समस्त कार्यकर्ताओं और मतदाताओं का आभार व्यक्त किया।

मनोबल बढ़ाने के लिए था 400 पार का नारा देशभर की अलग-अलग संसदीय सीटों से आए परिणामों में भाजपा को खासा नुकसान हुआ है। जबकि इस बार भाजपा का दावा था कि वह देश में जीती हुई सीट का आंकड़ा 400 पार करेगी, लेकिन ऐसा नही हुआ और भाजपा बहुमत से पिछड़ गई। हालांकि एनडीए गठबंधन के साथ मिलकर भाजपा देश में तीसरी बार सरकार बनाने जा रही है। इस मामले शाजापुर-देवास सांसद महेंद्रसिंह सोलंकी का कहना है कि कार्यकर्ताओं का मनोबल बढ़ाने के लिए 400 पार का नारा दिया गया था, किन्ही कारणों से यह पूरा नही हो सका, परंतु देश में तीसरी बार नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा की सरकार बनने जा रही है। उन्होने कहा कि वे अपने संसदीय क्षेत्र में बेहतर स्वास्थ्य और शिक्षा को लेकर कार्य करेंगे।

भीषण गर्मी में जिला अस्पताल में मचा हाहाकार

कंठ तर करने के लिए बूंद-बूंद को तरसे मरीज

भगवान दास बैरागी । सिटी चीफ ।
शाजापुर, जिला अस्पताल में भर्ती मरीज और उनके परिजन भीषण गर्मी में कूलर की ठंडी हवा नही मिलने से पहले ही परेशान हैं और अब उन्हे जिम्मेदारों की अनदेखी की वजह से प्यास बुझाने के लिए बूंद-बूंद पानी को भी तरसना पड़ रहा है, क्योंकि मौसम के तल्ख मिजाज के बावजूद जिला अस्पताल में पीने का गर्म पानी देने वाले वाटर कूलरों से पानी टपकना बंद हो गया है। ऐसे में परेशान मरीज और उनके परिजनों को अस्पताल से बाहर जाकर पीने के पानी का इंतजाम करना पड़ रहा है। उल्लेखनीय है कि अस्पताल के वार्डों में कूलर नही होने मरीज परेशान हैं और इस समस्या से जिम्मेदार अधिकारी भी वाकिफ हैं, लेकिन वार्डों में उन्होने कूलरों का इंतजाम नही किया है। इसी बीच जिला अस्पताल में लगे वाटर कूलरों ने बीते तीन दिनों से पानी उगलना बंद कर दिया है जिसकी वजह से मरीज और उनके परिजनों को भारी असुविधा का सामना करना पड़ रहा है। अस्पताल में भर्ती मरीजों के परिजनों ने बताया कि तीन दिनों से वॉटर कूलर से पीने का पानी नही आ रहा है जिसके कारण प्यास बुझाने के लिए पानी का इंतजाम करने अस्पताल से बाहर जाना पड़ रहा है। लोगों ने शीघ्र ही पानी की व्यवस्था करने की मांग की है।

पर्याप्त पानी के बावजूद परेशानी
शाजापुर जिला अस्पताल में जलापूर्ति के लिए दो कुंए और करीब दो ट्यूबवैल हैं, जिनमें पर्याप्त मात्रा में पानी है, लेकिन बावजूद इसके जिला अस्पताल में लोगों को पीने के पानी को भी तरसना पड़ रहा है। जिम्मेदारों की लापरवाही का आलम यह है कि अस्पताल की अलग-अलग मंजिलों पर लगे वाटर कूलरों से पानी बंद होने की उन्हे मंगलवार सुबह मीडिया के पहुंचने पर जानकारी लगी। इसके बाद जिम्मेदारों ने शीघ्र ही समस्या को दूर करने की बात कही। हालांकि समाचार लिखे जाने तक भी वॉटर कूलरों से पानी आना शुरू नही हो सका था।

यूपी के सहारनपुर में भाजपा के हात नहीं लगी कोई भी सीट

सपा समर्थित इमरान मसूद ने सहारनपुर लोकसभा सीट पर पहली बार अपनी जीत का परचम लहराया

गौरव सिंघल । सिटी चीफ ।
सहारनपुर, गन्ना पट्टी पश्चिमी उत्तर प्रदेश में 18 वीं लोकसभा के नतीजों ने जाट राजनीति और जाट नेतृत्व की नई इबारत लिखी है। सहारनपुर मंडल में भाजपा कोई भी सीट नहीं जीत पाई है। सपा समर्थित इमरान मसूद ने सहारनपुर लोकसभा सीट पर पहली बार अपनी जीत का परचम लहराया है। इमरान मसूद ने भाजपा उम्मीदवार राघव लखनपाल शर्मा को आसानी से पराजित कर दिया। दोनों के बीच यह लगातार तीसरा मुकाबला था। राघव लखनपाल शर्मा ने 2014 में इमरान मसूद को हराकर जरूरत जीत का स्वाद चखा था। लेकिन 2019 में वह बसपा गठबंधन उम्मीदवार फजर्लुरहमान कुरैशी से हार गए थे और इस बार इंडिया गठबंधन की ओर से पूरी ताकत से चुनाव मैदान में उतरे इमरान मसूद से हार गए। भाजपा ने सहारनपुर मंडल की कैराना लोकसभा सीट भी गंवा दी है। उसके उम्मीदवार और सांसद प्रदीप चौधरी को कांग्रेस समर्थित सपा उम्मीदवार इकरा हसन ने रोचक मुकाबले में हार का स्वाद चखाया। पहली बार लोकसभा चुनाव में उतरी और लंदन से शिक्षा प्राप्त 27 वर्षीय इकरा हसन को शुरू से ही जीत का प्रबल दावेदार माना जा रहा था। इकरा हसन की मां तब्बसुम हसन और पिता मुनव्वर हसन और बाबा

अख्तर हसन भी सांसद रह चुके हैं। मुजफ्फरनगर के प्रतिष्ठापूर्ण मुकाबले में केंद्रीय राज्यमंत्री डा. संजीव बालियान को सपा उम्मीदवार और प्रमुख जाट नेता हरेंद्र मलिक के हाथों करीबी मुकाबले में हार का मुंह देखना पड़ा। संजीव बालियान की पराजय से भाजपा को तगड़ा झटका लगा है। पिछले दो चुनाव जीतकर संजीव बालियान ने जाटों के बड़े नेता की पहचान बना ली थी। लेकिन चुनावी रणनीति में माहिर हरेंद्र मलिक के सामने बालियान की एक ना चली। बालियान को भाजपाईयों की नाराजगी का खामियाजा भी भुगतना पड़ा। दिलचस्प बात यह है कि चुनाव से ऐन पहले भाजपा और रालोद का गठबंधन अपने आपमें सफल रहा। बागपत से उसके उम्मीदवार राजकुमार सांगवान और बिजनौर से युवा राष्ट्रीय लोकदल के अध्यक्ष चंदन चौहान ने कड़े मुकाबले में सपा उम्मीदवार दीपक सैनी को पराजित कर पहली बार संसद में प्रवेश लिया। चंदन चौहान भी बड़े राजनीतिक परिवार से हैं। उनके पिता संजय चौहान सांसद और विधायक रह चुके हैं और बाबा चौधरी नारायण सिंह उप मुख्यमंत्री रहे। जयंत चौधरी की जीत का स्कोर शत-प्रतिशत रहा। उन्होंने गठबंधन को मिली दोनों सीटें जीतकर सपा सुप्रीमो अखिलेश यादव और गठबंधन में शामिल कांग्रेस की लहर में आने से बखूबी बचाने का काम किया। समीक्षकों का मानना है कि यदि रालोद को भाजपा ज्यादा सीटें देती तो भाजपा को बड़ा फायदा हो सकता था।ध्यान रहे रालोद ने इंडिया गठबंधन में रहते हुए सात सीटें प्राप्त की थी। लेकिन अंतिम समय में भाजपा के साथ जाने के दौरान उन्हें दो सीटों से ही संतोष करना पड़ा। अब जयंत चौधरी पश्चिमी उत्तर प्रदेश के निर्विवाद और रसूखदार नेता के रूप में उभरकर सामने आए हैं। उन्होंने खुद इस बार लोकसभा चुनाव नहीं लड़ा था और अपनी परंपरागत बागपत सीट पर एक साधारण पृष्ठभूमि के अपने कार्यकर्त्ता राजकुमार सांगवान को आगे किया था। इसी तरह पश्चिमी उत्तर प्रदेश प्रतिष्ठित गुर्जर नेता और मीरापुर से रालोद विधायक को उन्होंने बिजनौर में उतारा था। जयंत चौधरी के सभी प्रयोग सफल रहे हैं। जयंत चौधरी भाजपा को कैराना, मुजफ्फरनगर, अमरोहा आदि सीटें भले ही ना जिता पाए हों लेकिन उन्होंने आज की नई राजनीति और नए भारत में खुद को एक ताकत के रूप में जरूर खड़ा किया है।

शहीदी पर्व के उपलक्ष्य में रोजाना छबील लगाकर राहगीरों को पिलाया जा रहा है ठंडा शरबत

10 जून को श्रद्धा व उत्साह से मनाया जाएगा शहीदी पर्व

गौरव सिंघल । सिटी चीफ ।
देवबंद, साहिब श्री गुरू अर्जुन देव जी के शहीदी पर्व के उपलक्ष्य में पिछले 5 दिनों से गुरूद्वारा साहिब के बाहर दोपहर को छबील लगाकर राहगीरों को ठंडा शरबत पिलाया जा रहा है। तपती गर्मी में शरबत पीकर राहगीर वाहेगुरू का शुक्रिया अदा कर रहे है। छवें पातशाह साहिब श्री गुरू अर्जुन देव जी के शहीदी पर्व को लेकर कार्यक्रमों का सिलसिला शुरू हो चुका है। महिला सुखमणि सेवा सोसाइटी द्वारा 40 दिनों तक प्रतिदिन चलने वाली श्री सुखमणि साहिब के पाठ की लड़ी जारी है। वहीं, गुरूद्वारा श्री गुरूनानक सभा के बाहर 21 दिनों तक लगने वाली छबील (ठंडा शरबत) की सेवा में भी संगत बढ चढकर भाग ले रही है। गुरूद्वारा कमेटी के सचिव गुरजोत सिंह सेठी ने बताया गुरू अर्जुन देव जी के शहीदी पर्व 10 जून को श्री सुखमणि साहिब के पाठ की लड़ी का समापन होगा। छबील के संयोजक जत्थेदार चंद्रदीप सिंह ने बताया कि छबील 18 जून तक चलेगी। इस दौरान सेठ कुलदीप कुमार, गुरजोत सिंह सेठी, चंद्रदीप सिंह, सचिन छाबड़ा, लवली सूरी, हर्ष बतरा, बिट्टू कपूर, तनिष्क अरोड़ा, हर्ष

नारंग, पार्थ रतड़ा आदि मौजूद रहे।

संदिग्ध परिस्थितियों में मिला किसान का शव

पुलिस को शव के पास मिला गेहूं में रखी जाने वाली दवा, पोस्टमार्टम रिपोर्ट का इंतज़ार

गौरव सिंघल । सिटी चीफ । सहारनपुर (नागल), संदिग्ध परिस्थितियों में मीरपुर मोहनपुर रेल अंडर पास में बीती रात पुलिस को एक किसान का शव मिलने से सनसनी फैल गई, पुलिस ने रात में ही शव का पंचनामा पर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया। कस्बे के सेक्टर 99 निवासी करीब 45 वर्षीय विक्रांत गिरी घर से खेत पर जाने को कहकर निकाला था, लेकिन देर रात तक वापस नहीं आया। रात करीब 2 बजे पुलिस को गश्त के दौरान रेलवे अडंरपास में विक्रांत का शव पड़ा मिला। पुलिस ने जेब से मिले मोबाइल के आधार पर मृतक की शिनाख्त करते हुए परिजनों को सूचित किया। पुलिस के अनुसार शव के पास ही मृतक की बाइक खड़ी मिली तथा नजदीक ही गेहूं में रखी जाने वाली दवा का एक पैकेट भी मिला है, जिससे माना जा रहा है कि जहरीले पदार्थ का सेवन कर विक्रांत गिरी ने अपनी जान दी है। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही मौत के कारणों का सही पता चल सकेगा।

विभिन्न मांगों को लेकर प्राइवेट विद्युतकर्मियों (मीटर रीडर्स) ने किया कार्य बहिष्कार

मांगों से संबंधित ज्ञापन बिजली अधिकारियों को सौंपा

गौरव सिंघल । सिटी चीफ । देवबंद । सहारनपुर, विभिन्न मांगों को लेकर प्राइवेट विद्युतकर्मियों (मीटर रीडर्स) ने कार्य बहिष्कार रखा और मांगों से संबंधित ज्ञापन बिजली अधिकारियों को सौंपा। रेलवे रोड स्थित विद्युत कार्यालय पर पहुंचे विद्युत कर्मियों ने जोनल मैनेजर सहारनपुर एमएम गांधी को ज्ञापन दिया। जिसमें कहा गया कि विभाग द्वारा उन्हें 80 प्रतिशत का जो दैनिक लक्ष्य दिया गया है, वह देवबंद डिवीजन में पूर्ण हो पाना संभव नहीं है। ऐसे में लक्ष्य प्राप्ति नहीं होने पर उनकी सैलरी से कोई कटौती न की जाए। साथ ही जिन मीटर रीडर का वालेट का पैसा कंपनी के पास है, उसे तुरंत खातों में ट्रांसफर कराया जाए। चेतावनी दी कि जब तक उक्त समस्याओं का समाधान नहीं होता है तब तक

कार्य का बहिष्कार रखा जाएगा। इस दौरान मीटर रीडर प्रदीप, राहुल, मोहसिन, कुलदीप, शाहनवाज, नौशाद, विजय, मनोज, अनस, प्रेम, लक्की, रजत, फिरोज, मोहित व जगदीप आदि मौजूद रहे।

तालाबो के पुनर्रोध्दोर, जीर्णोध्दार एवं नवीनीकरण किए जाने हेतु लक्ष्य निर्धारित

उमरिया जीर्णोध्द्यार , नवीनीकरण किए गये समस्तध तालाबो को राजस्वर रिकार्ड मे दर्ज किए जाने के कलेक्टर ने दिए निर्देश

उमरिया। नमामि गंगे अभियान के तहत पूर्व निर्मित जल संरचनाएं जैसे नदी, तालाब, कूप, बावडी आदि उपलब्ध है जो कि वर्तमान में विभिन्न कारणों से अनुपयोगी हो गये है। जल स्त्रोतो को अवरिल बनाये जाने के लिए इन संरचनाओ का पुनर्रोध्दार, जीर्णोध्दार , अतिक्रमण से मुक्त कराना एवं नवीनीकरण किया जाकर इन्हे उपयोगी, यथा संभव आर्थिक रूप से भी उपयोगी बनाया जाना आवश्यक है ।कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार जैन ने बताया कि विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून से 16 जून तक की अवधि में जिले मे प्रवाहित होने वाली नदियों, तालाबो, प्रवाहित होने वाली नदियो , तालाबो एवं जल संरचनाओ के पुर्नजीवीकरण, संरक्षण का विशेष अभियान चलाया जाएगा । विशेष अभियान के अंतर्गत जनप्रतिनिधि गण, सामाजिक तथा अशासकीय संस्थाओ व योजना आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग के अंतर्गत कार्यरत जन अभियान परिषद की सहभागिता सुनिश्चित कराते हुए अभियान का क्रियान्वयन दिए गए निर्देशानुसार करेंगे । तालाबो के पुनर्रोध्दार , जीर्णोध्दार एवं नवीनीकरण किए जाने हेतु विभागवार लक्ष्य निर्धारित किया गया है । उन्होने कहा है कि ग्रामीण क्षेत्र अंतर्गत समस्त, तालाब, बावडी, अन्य जल संरचनाओ का गहरीकरण, जीर्णोध्दार संबंधित कार्यो को जनपद करकेली, मानपुर, पाली के मुख्य कार्यपालन अधिकारी संपादित करेगे । इसी प्रकार समस्त नगर पालिका, नगर परिषद समस्त तालाबो, बावडी, तालाबो , अन्य जल संरचनाओ के गहरीकरण , जीर्णोध्दार संबंधित कार्यो का मुख्य नगर पालिका अधिकारी , नगर परिषद संपादित करेंगे । निर्धारित प्रपत्र मे जानकारी संकलित किए जाने हेतु ग्रामीण क्षेत्र हेतु सीईओ जिला पंचायत उमरिया तथा नगरीय निकाय हेतु जिला परियोजना समन्वयक शहरी विकास अभिकरण उमरिया नोडल अधिकारी होगे ।

लोकसभा निर्वाचन 2024 के परिणाम घोषित, लोकसभा क्षेत्र रतलाम से श्रीमती अनिता चौहान हुए विजेता

झाबुआ

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा निर्धारित कार्यक्रम के तहत 04 जून मंगलवार को पॉलीटेक्निक कॉलेज झाबुआ में मतों की गिनती विधानसभा क्षेत्रवार बनाए गए मतगणना कक्षों में की गई। गिनती के बाद रिटर्निंग अधिकारी नेहा मीना ने चुनाव परिणाम घोषित किए। 24 रतलाम संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के विधानसभा क्षेत्र 191 अलीराजपुर में भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान को 109708, इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध श्री कांतिलाल भूरिया को 58128, बहुजन समाज पार्टी से रामचंद्र सोलंकी को 2027, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) से उदेसिंह मचार को 535, भारत आदिवासी पार्टी से इंजीनियर बालूसिंह गामड़ को 533, भारतीय सामाजिक पार्टी से मोहनसिंह निंगवाल को 583, अखंड भारत साम्राज्य पार्टी से शीतल बारेला को 611, निर्दलीय कसना राणा पारगी को 1101, निर्दलीय रामेश्वर सिंगार को 631, निर्दलीय रंगला कलेश को 1161, निर्दलीय सुमित्रा मेड़ा को 1240, निर्दलीय सुरज भाभर को 1915 और नोटा को 6263 मत मिले है।विधानसभा क्षेत्र 192 जोबट में भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान को 98593, इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध श्री कांतिलाल भूरिया को 76959, बहुजन समाज पार्टी से रामचंद्र सोलंकी को 2581, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) से उदेसिंह मचार को 686, भारत आदिवासी पार्टी से इंजीनियर बालूसिंह गामड़ को 1224, भारतीय सामाजिक पार्टी से मोहनसिंह निंगवाल को 927, अखंड भारत साम्राज्य पार्टी से शीतल बारेला को 879, निर्दलीय कसना राणा पारगी को 1261, निर्दलीय रामेश्वर सिंगार को 882, निर्दलीय रंगला कलेश को 1262, निर्दलीय सुमित्रा मेड़ा को 1628, निर्दलीय सुरज भाभर को 2401 और नोटा को 8261 मत मिले है।विधानसभा क्षेत्र 193 झाबुआ में भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान को 105543, इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध श्री कांतिलाल भूरिया को 96477, बहुजन समाज पार्टी से रामचंद्र सोलंकी को 2518, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) से उदेसिंह मचार को 562, भारत आदिवासी पार्टी से इंजीनियर बालूसिंह गामड़ को 911, भारतीय सामाजिक पार्टी से मोहनसिंह निंगवाल को 727, अखंड भारत साम्राज्य पार्टी से शीतल बारेला को 644, निर्दलीय कसना राणा पारगी को 1195, निर्दलीय रामेश्वर सिंगार को 714, निर्दलीय रंगला कलेश को 960, निर्दलीय सुमित्रा

मेड़ा को 1062, निर्दलीय सुरज भाभर को 1488 और नोटा को 4649 मत मिले है।विधानसभा क्षेत्र 194 थांदला में भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान को 99688, इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध श्री कांतिलाल भूरिया को 87431, बहुजन समाज पार्टी से रामचंद्र सोलंकी को 1954, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) से उदेसिंह मचार को 438, भारत आदिवासी पार्टी से इंजीनियर बालूसिंह गामड़ को 4842, भारतीय सामाजिक पार्टी से मोहनसिंह निंगवाल को 480, अखंड भारत साम्राज्य पार्टी से शीतल बारेला को 403, निर्दलीय कसना राणा पारगी को 988, निर्दलीय रामेश्वर सिंगार को 444, निर्दलीय रंगला कलेश को 737, निर्दलीय सुमित्रा मेड़ा को 755, निर्दलीय सुरज भाभर को 1038 और नोटा को 3047 मत मिले है।विधानसभा क्षेत्र 195 पेटलावद में भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान को 106305, इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध श्री कांतिलाल भूरिया को 90807, बहुजन समाज पार्टी से रामचंद्र सोलंकी को 2386, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) से उदेसिंह मचार को 480, भारत आदिवासी पार्टी से इंजीनियर बालूसिंह गामड़ को 8305, भारतीय सामाजिक पार्टी से मोहनसिंह निंगवाल को 599, अखंड भारत साम्राज्य पार्टी से शीतल बारेला को 540, निर्दलीय कसना राणा पारगी को 1083, निर्दलीय रामेश्वर सिंगार को 656, निर्दलीय रंगला कलेश को 930, निर्दलीय सुमित्रा मेड़ा को 831, निर्दलीय सुरज भाभर को 1164 और नोटा को 3904 मत मिले है।विधानसभा क्षेत्र 219 रतलाम ग्रामीण भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान को 105469, इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध श्री कांतिलाल भूरिया को 58890, बहुजन समाज पार्टी से रामचंद्र सोलंकी को 1243, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) से उदेसिंह मचार को 219, भारत आदिवासी पार्टी से इंजीनियर बालूसिंह गामड़ को 2609, भारतीय सामाजिक पार्टी से मोहनसिंह निंगवाल को 207, अखंड भारत साम्राज्य पार्टी से शीतल बारेला को 192, निर्दलीय कसना राणा पारगी को 387, निर्दलीय रामेश्वर सिंगार को 211, निर्दलीय रंगला कलेश को 346, निर्दलीय सुमित्रा मेड़ा को 330, निर्दलीय सुरज भाभर को 502 और नोटा को 1590 मत मिले है।विधानसभा क्षेत्र 220 रतलाम शहरी भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान को 106521, इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध श्री कांतिलाल भूरिया को 46842, बहुजन समाज पार्टी से रामचंद्र सोलंकी को 352, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) से उदेसिंह मचार को 49, भारत आदिवासी पार्टी से इंजीनियर बालूसिंह गामड़ को 250, भारतीय सामाजिक पार्टी से मोहनसिंह निंगवाल को 44, अखंड भारत साम्राज्य पार्टी से शीतल बारेला को 39, निर्दलीय कसना राणा पारगी को 117, निर्दलीय रामेश्वर सिंगार को 37, निर्दलीय रंगला कलेश को 72, निर्दलीय सुमित्रा मेड़ा को 77, निर्दलीय सुरज भाभर को 121 और नोटा को 1358 मत मिले है। विधानसभा क्षेत्र 221 सैलाना भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान को 59605, इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध श्री कांतिलाल भूरिया को 71370, बहुजन समाज पार्टी से रामचंद्र सोलंकी को 2098, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) से उदेसिंह मचार को 826, भारत आदिवासी पार्टी से इंजीनियर बालूसिंह गामड़ को 33851, भारतीय सामाजिक पार्टी से मोहनसिंह निंगवाल को 936, अखंड भारत साम्राज्य पार्टी से शीतल बारेला को 621, निर्दलीय कसना राणा पारगी को 1179, निर्दलीय रामेश्वर सिंगार को 1028, निर्दलीय रंगला कलेश को 1863, निर्दलीय सुमित्रा मेड़ा को 1004, निर्दलीय सुरज भाभर को 1431 और नोटा को 2625 मत मिले है। इस प्रकार कुल विधानसभा क्षेत्र के मतदान केन्द्रों पर दर्ज भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान को 793432, इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध श्री कांतिलाल भूरिया को 586904, बहुजन समाज पार्टी से रामचंद्र सोलंकी को 15159, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) से उदेसिंह मचार को 3795, भारत आदिवासी पार्टी से इंजीनियर बालूसिंह गामड़ को 52525, भारतीय सामाजिक पार्टी से मोहनसिंह निंगवाल को 4503, अखंड भारत साम्राज्य पार्टी से शीतल बारेला को 3929, निर्दलीय कसना राणा पारगी को 7311, निर्दलीय रामेश्वर सिंगार को 4603, निर्दलीय रंगला कलेश को 7331, निर्दलीय सुमित्रा मेड़ा को 6927, निर्दलीय सुरज भाभर को 10060 और नोटा को 31697 मत मिले है। विधानसभा क्षेत्र के मतदान केन्द्रों पर डाक मत पत्रों में दर्ज मतों की संख्या भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान को 2431, इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध श्री कांतिलाल भूरिया को 1727, बहुजन समाज पार्टी से रामचंद्र सोलंकी को 13, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) से उदेसिंह मचार को 01, भारत आदिवासी पार्टी से इंजीनियर बालूसिंह गामड़ को 234, भारतीय सामाजिक पार्टी से मोहनसिंह निंगवाल को 04, अखंड भारत साम्राज्य पार्टी से शीतल बारेला को 01, निर्दलीय कसना राणा पारगी को 05, निर्दलीय रामेश्वर सिंगार को 04, निर्दलीय रंगला कलेश को 04, निर्दलीय सुमित्रा मेड़ा को 03, निर्दलीय सुरज भाभर को 02 और नोटा को 38 मत मिले है। इस प्रकार भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान को 795863, इंडियन नेशनल कांग्रेस पार्टी से सम्बद्ध श्री कांतिलाल भूरिया को 588631, बहुजन समाज पार्टी से रामचंद्र सोलंकी को 15172, रिपब्लिकन पार्टी ऑफ इंडिया (ए) से उदेसिंह मचार को 3796, भारत आदिवासी पार्टी से इंजीनियर बालूसिंह गामड़ को 52759, भारतीय सामाजिक पार्टी से मोहनसिंह निंगवाल को 4507, अखंड भारत साम्राज्य पार्टी से शीतल बारेला को 3930, निर्दलीय कसना राणा पारगी को 7316, निर्दलीय रामेश्वर सिंगार को 4607, निर्दलीय रंगला कलेश को 7335, निर्दलीय सुमित्रा मेड़ा को 6930, निर्दलीय सुरज भाभर को 10062 और नोटा को 31735 मत मिले है। भारतीय जनता पार्टी से सम्बद्ध श्रीमती अनिता चौहान 207232 मतों से विजयी रही। रतलाम क्षेत्र की रिटर्निंग अधिकारी नेहा मीना के द्वारा प्रमाण पत्र प्रेक्षक सुश्री मागेश्वरी रविकुमार और श्री एच.पी. पटेल की उपस्थिति में दिया गया।

18वीं लोकसभा निर्वाचन की मतगणना शांतिपूर्ण सम्पन्न

बालाघाट

विजेता प्रत्याशी को 712660 मत प्राप्त हुये

निकटतम प्रतिद्वंदी को 538148 मत मिले

निर्वाचन कार्यालय के प्रबंधों से सभी प्रसन्न

चॉक चौबंद व्यवस्था के बीच सम्पन्न हुई मतगणना

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा 18वीं लोकसभा गठन के लिये आयोजित निर्वाचन की मतगणना शांतिपूर्ण रूप से स्थानीय पालिटेक्निक महाविद्यालय में बनाये गए मतगणना स्थल पर सम्पन्न हुई। मतगणना प्रक्रिया की शुरुआत मंगलवार सुबह 5 बजे जिला निर्वाचन व रिटर्निंग अधिकारी डॉ. गिरीश कुमार मिश्रा और निर्वाचन आयोग द्वारा नियुक्त प्रेक्षकों श्री शुभकरण सिंह और श्री बसीर अहमद खान के निर्देशन में की गई। रेंडमाईजेशन के बाद आयोग के निर्देशानुसार डाक मतपत्र के स्ट्रांग रूम राजनीतिक दलों की मौजूदगी में खोले गये। इसके पश्चात डाक मतपत्रों की शार्टिंग की गई। वहीं आयोग द्वारा तय समय के अनुसार 8 बजे डाक मतपत्रों की गणना प्रारंभ हुई। साथ ही ईव्हीएम मशीन के 6 विधानसभाओं के स्ट्रांग रूम राजनीतिक दलों और निर्वाचन प्रेक्षकों की निगरानी में खोलने के पश्चात मतगणना सुबह 8ः30 बजे से प्रारंभ हुई। लगभग 6ः30 बजे संसदीय क्षेत्र बालाघाट-सिवनी की मतगणना सम्पन्न हुई। जिला निर्वाचन कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार विजेता प्रत्याशी भाजपा की श्रीमती भारती पारधी को 712660 और निकटतम प्रतिद्वंदी कांग्रेस के श्री सम्राट अशोक सिंह सरसवार को 580148 मत प्राप्त हुये। इस तरह भाजपा की अभ्यर्थी श्रीमती भारती पारधी ने बालाघाट संसदीय सीट के लोकसभा निर्वाचन में 174512 मतों से जीत हासिल की।

विजेता प्रत्याशी को सबसे अधिक मत सिवनी विधानसभा में और निकटतम प्रत्याशी को बैहर विधानसभा में जिला निर्वाचन कार्यालय से प्राप्त जानकारी के अनुसार विजेता प्रत्याशी श्रीमती भारती पारधी को सबसे अधिक मत सिवनी विधानसभा से प्राप्त हुये है। इसमें उन्हें 118587 मत प्राप्त हुये है। इसी तरह बरघाट विधानसभा में 102869, लांजी विधानसभा

में 89436, बालाघाट विधानसभा में 84576, परसवाड़ा विधानसभा से 82166, बैहर विधानसभा से 80456 और वारासिवनी से 75925 व कटंगी विधानसभा से 75924 मत प्राप्त हुये है। इसी तरह कांग्रेस के निकटतम प्रतिद्वंदी श्री सम्राट सिंह सरसवार को बैहर विधानसभा में सबसे अधिक मत 77116 मत प्राप्त हुये। लांजी विधानसभा में 75503, बरघाट विधानसभा से 72472, बालाघाट विधानसभा से 69148, परसवाड़ा विधानसभा से 65770, कटंगी विधानसभा से 61053, सिवनी में 59885 और वारासिवनी विधानसभा में 55386 मत प्राप्त हुये।

लोकसभा निर्वाचन 2024 में बसपा के प्रत्याशी श्री कंकर मुंजारे को बैहर विधानसभा में 3721, लांजी में 6146, परसवाड़ा में 10967, बालाघाट में 10735, वारासिवनी में 10095, कटंगी में 6216, बरघाट में 2902 तथा सिवनी में 2101 मत प्राप्त हुये। गोंडवाना गणतंत्र पार्टी के श्री नंदलाल उइके को बैहर विधानसभा में 3177, लांजी में 1019, परसवाड़ा में 1259, बालाघाट में 556, वारासिवनी में 582, कटंगी में 643, बरघाट में 1161 तथा सिवनी में 3941 मत प्राप्त हुये। भारती शक्ति चेतना पार्टी प्रियंका संजय भंडारकर को बैहर विधानसभा में 375, लांजी में 573, परसवाड़ा में 588, बालाघाट में 265, वारासिवनी में 350, कटंगी में 226, बरघाट में 249 तथा सिवनी में 280 मत प्राप्त हुये। पीपुल्स पार्टी ऑफ इंडिया के श्री डीएल मानेश्वर को बैहर विधानसभा में 1782, लांजी में 1153, परसवाड़ा में 1437, बालाघाट में 1209, वारासिवनी में 1377, कटंगी में 1029, बरघाट में 1447 और सिवनी विधानसभा में 560 मत प्राप्त हुये। राष्ट्रवादी भारत पार्टी के श्री मोहन राउत को बैहर विधानसभा में 606, लांजी में 553, परसवाड़ा में 448, बालाघाट में 252, वारासिवनी में 353, कटंगी में 346, बरघाट में 422 और सिवनी में 557 मत प्राप्त हुये। इसी तरह मप्र जनविकास पार्टी के अधिवक्ता सत्यप्रकाश शुल्के (लोधी) को बैहर विधानसभा में 378, लांजी में 305, परसवाड़ा में 236, बालाघाट में 135, वारासिवनी में 156, कटंगी में 169, बरघाट में 216 तथा सिवनी में 334 मत प्राप्त हुये। निर्दलीय प्रत्याशियों में श्री दिलीप छाबड़ा को बैहर विधानसभा में 358, लांजी में 249, परसवाड़ा में 246, बालाघाट में 131, वारासिवनी में 139, कटंगी में 127, बरघाट में 222 और सिवनी में 261 मत प्राप्त हुये। निर्दलीय प्रत्याशी श्री धनेश्वर देव पवार बनवारी सेठ को बैहर विधानसभा में 665, लांजी में 778, परसवाड़ा में 711, बालाघाट में 578, वारासिवनी में 679, कटंगी में 642, बरघाट में 2279 और सिवनी में 853 मत प्राप्त हुये। निर्दलीय प्रत्याशी श्री भुवनसिंह कोराम को बैहर विधानसभा में 3989, लांजी में 1735, परसवाड़ा में 2195, बालाघाट में 1525, वारासिवनी में 1048, कटंगी में 1043, बरघाट में 767 और सिवनी में 726 मत प्राप्त हुये। निर्दलीय प्रत्याशी श्री महादेव नागदेवे को बैहर विधानसभा में 1522, लांजी में 1158, परसवाड़ा में 862, बालाघाट में 496, वारासिवनी में 613, कटंगी में 585, बरघाट में 945 और सिवनी में 1000 मत प्राप्त हुये। निर्दलीय प्रत्याशी श्री राजकुमार नागेश्वर को बैहर विधानसभा में 1223, लांजी में 1103, परसवाड़ा में 811, बालाघाट में 560, वारासिवनी में 475, कटंगी में 521, बरघाट में 989 और सिवनी में 1041 मत प्राप्त हुये।

13 प्रत्याशियों को इस तरह प्राप्त हुये मत लोकसभा निर्वाचन अंतर्गत डाक मतपत्रों सहित कंकर मुजारे को कुल मत 53134, भारती पारधी को 712660, सम्राट अशोक सिंह सरसवार को 538148, नंदलाल उइके को 12422, प्रियंका संजय भंडारकर को 2926, डीएल मानेश्वर को 10017, मोहन राउत को 3542, अधिवक्ता सत्यप्रकाश उइके को 1932, दिलीप छाबड़ा को 1750, धानेश्वर देव पवार बनवारी सेठ को 7245, भुवन सिंह कोराम को 13074, महादेव नागदेवे को 7192, राजकुमार नागेश्वर को 6728 मत प्राप्त हुये ।

गर्मी से बचाव के प्रबंध रहे सफल मतगणना स्थल पर गर्मी से बचाव के लिये सभी

अमेरिकी वायु सेना ने बेड़े में शामिल किए 2 नए बोइंग केसी -46 टैंकर

वॉशिंगटन: अमेरिकी वायु सेना ने अपनी ताकत को बढ़ाते हुए नए बोइंग KC-46 टैंकर शामिल कर लिए हैं जिससे उसके बेड़े की संख्या 84 तक बढ़ गई है। अमेरिका की संयुक्त बेस मैकगायर-डिक्स-लेकहर्स्ट ने अपने 21वें और 22वें चट्ट-46 पेगासस विमान जोड़े हैं। सीनेटर मेनेंडेज़ ने कहा कि वैश्विक ईंधन भरने के संचालन के लिए आवश्यक चट्ट-46 बेड़े की लागत प्रति विमान लगभग 150 मिलियन है। KC-46 की मेजबानी से इस संयुक्त बेस की हवाई ईंधन भरने के लिए निर्विवाद पूर्वी तट केंद्र के रूप में स्थिति सुरक्षित हो गई है। ये टैंकर पुराने KC-135 और चट्ट-10 मॉडल की जगह लेंगे, जो 2030 के दशक में अगली पीढ़ी के एयर रिफ्यूलिंग सिस्टम के आने तक निरंतर समर्थन सुनिश्चित करते हैं। बोइंग और अन्य रक्षा ठेकेदार NGAS को डिजाइन और निर्माण करने के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं, जो अमेरिकी सैन्य रणनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। इसके अलावा अमेरिका ने कैलिफोर्निया के वैंडेनबर्ग स्पेस फोर्स बेस से मिनटमैन III मिसाइल का परीक्षण किया है। मिनटमैन III एक अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल है, जिसे पहले ही अमेरिकी सेना में शामिल किया जा चुका है। इस परीक्षण को स्र स्पेस फोर्स ने अंजाम दिया है। परीक्षण के बाद स्पेस फोर्स ने कहा, एयर फोर्स ग्लोबल स्ट्राइक कमांड ने मंगलवार, 4 जून को सुबह 12:56 बजे वैंडेनबर्ग स्पेस फोर्स बेस से एक अनआर्म्ड मिनटमैन III अंतरमहाद्वीपीय बैलिस्टिक मिसाइल का परिचालन परीक्षण किया। एयर फोर्स ग्लोबल स्ट्राइक कमांड के अनुसार, ICBM परीक्षण लॉन्च कार्यक्रम का उद्देश्य हथियार प्रणाली की सुरक्षा, सुरक्षा, प्रभावशीलता और तत्परता को मान्य और सत्यापित करना है। इसका उद्देश्य यह प्रदर्शित करना है कि अमेरिका का न्यूक्लियर डेटरेंस सुरक्षित, विश्वसनीय और प्रभावी रहे। मिनटमैन मिसाइल का पूरा नाम LGM-30G Minuteman-III है। LGM में रुका अर्थ साइलो लॉन्च मिसाइल से है। इसे अमेरिकी रक्षा मंत्रालय ने कोड के तौर पर निर्धारित किया है। त्र का अर्थ ग्राउंड अटैक यानी जमीन पर मार करने वाली और रुका अर्थ गाइडेड मिसाइल है। इतना ही नहीं, इसके नाम में जुड़ा 30 मिनटमैन सीरीज की मिसाइलों के लिए और उसके बाद लगा त्र वर्तमान की मिनटमैन-3 मिसाइल को बताता है। मिनटमैन-III मिसाइल का निर्माण अमेरिकी कंपनी बोइंग डिफेंस ने किया है। इस मिसाइल को पावर देने के लिए तीन सॉलिड प्रोपेलैंड रॉकेट मोटर का इस्तेमाल किया गया है। इसके पहले चरण में एटीके एम55ए1, दूसरे में एटीके एसआर-19 और तीसरे चरण में एटीके एसआर-73 इंजन का इस्तेमाल किया जाता है। मिनटमैन-III मिसाइल का वजन 36,030 किलोग्राम होता है।

भारत से गिफ्ट मिले 2 हेलीकॉप्टरों का इस्तेमाल कर रहे मालदीव के रक्षा कर्मी

इंटरनेशनल डेस्क: भारत के मालदीव से अपने सैनिकों को वापस बुलाने के कुछ सप्ताह बाद भी, भारत की ओर से मालदीव को उपहार स्वरूप दिए गए दो हेलीकॉप्टरों का नियमित रूप से संचालन किया जा रहा है, जिनमें एमएनडीएफ का एक सैनिक सवार रहता है। 'अजाजू डॉट कॉम' ने एक हवाईअड्डा अधिकारी के हवाले से कहा कि हेलीकॉप्टर उड़ाए जाने पर मालदीव राष्ट्रीय रक्षा बल का एक सैनिक उनपर मौजूद रहता है। चीन समर्थक राष्ट्रपति मोहम्मद मुइज्जू ने पिछले साल सितंबर में सत्ता में आने पर अपने देश से सभी भारतीय सैन्यकर्मियों को वापस भेजने का वादा किया था। 10 मई की तय समयसीमा तक 88 में से अंतिम भारतीय सैन्यकर्मियों को वापस भेज दिया गया था। भारत की तरफ से उपहार में दिए गए दो हेलीकॉप्टर और एक डोर्नियर विमान का उपयोग मालदीव में सैकड़ों निकासी और मानवीय मिशनों के लिए किया गया है।

तिआनमेन नरसंहार की 35वीं वर्षगांठ पर चीन और हांगकांग में सुरक्षा के भारी इंतजाम

बीजिंग: थ्यानमेन नरसंहार की 35वीं बरसी पर चीन और हांगकांग में सुरक्षा के भारी बंदोबस्त किए गए और लोकतंत्र समर्थक प्रदर्शनकारियों पर खूनी कार्रवाई के गवाह रहे थ्यानमेन चौक को जाने वाली मुख्य सड़कों पर जगह जगह पुलिस चौकियां और बख्तरबंद वाहनों की कतारें देखी गईं। हांगकांग पुलिस ने भारी चौकसी बरतते हुए बरसी संबंधी किसी भी सार्वजनिक कार्यक्रम को रोकने के लिए सड़क से कम से कम दो लोगों को हटा दिया। चीन काफी समय पहले ही नरसंहार की उन सभी निशानियों को कुचल चुका है जब चीनी सरकार ने कम्युनिस्ट शासन को बनाए रखने और महीनों से चल रहे विरोध प्रदर्शनों को समाप्त करने के लिए सेना को कार्रवाई का आदेश दिया था। इस आदेश के बाद अनुमान है कि 180,000 सैनिक और सशस्त्र पुलिस बल टैंकों के साथ पहुंचे और थ्यानमेन चौक पर प्रदर्शनकारी छात्रों पर गोलियां बरसाईं। आज तक मरने वालों की संख्या का पता नहीं चल पाया है। ये माना जाता है कि हजारों नहीं तो सैकड़ों लोग इस अभियान में मारे गए थे जो कि एक रात पहले शुरू होकर 4 जून, 1989 की सुबह समाप्त हुआ था। यह नरसंहार आधुनिक चीनी इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। कम्युनिस्ट पार्टी के कट्टरपंथियों के पक्ष में संकट समाप्त हो गया जो राजनीतिक सुधारों की बजाय नियंत्रण का समर्थन करते थे। पूरे चीन में आज भी इस घटना को संवेदनशील नजरिए से देखा जाता है। यह घटना वर्जित विषय है और सोशल मीडिया पर किसी भी तरह से इसको लेकर किए गए पोस्ट को तुरंत हटा दिया जाता है। मंगलवार को चीन की राजधानी में जीवन रोज की तरह ही सामान्य रहा। थ्यानमेन चौक और फोरबिडन सिटी में प्रवेश करने के लिए, पर्यटक कतारों में खड़े रहे। चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता माओ निंग ने इस मामले पर टिप्पणी करते हुए कहा, 1980 के दशक के अंत में हुई राजनीतिक उथल-पुथल के संबंध में चीनी सरकार का निष्कर्ष बहुत पहले ही स्पष्ट हो चुका है। विदेशी सरकारों द्वारा इस वर्षगांठ पर की गई टिप्पणी के सवाल पर उन्होंने कहा, हम इस बात का दृढ़ता से विरोध करते हैं कि कोई भी इस घटना का चीन पर हमला करने, उसे बदनाम करने तथा चीन के आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप करने के बहाने के तौर पर इस्तेमाल करे। हांगकांग वासियों की स्मृति से इस नरसंहार की यादों को पहले ही समाप्त किया जा चुका है। बरसी के मौके पर बड़ी संख्या में पुलिस बल सड़कों पर नजर आया। एक अधेड़ व्यक्ति को पुलिस वाले पकड़ कर ले जाते दिख जिसने अपने हाथों में हाथ से लिखे दो पोस्टर पकड़ रखे थे। हांगकांग के नेता जॉन ली ने इस सवाल का कोई सीधा जवाब नहीं दिया कि क्या शहर के लोग आज भी नरसंहार पर सार्वजनिक रूप से शोक व्यक्त करते हैं।

पाकिस्तान में पोलियो टीकाकरण टीम की सुरक्षा में तैनात एक और पुलिस अधिकारी की हत्या

पेशावर: पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिम में पोलियो कार्यकर्ताओं की सुरक्षा के लिए तैनात एक पुलिस अधिकारी की बंदूकधारियों ने गोली मारकर हत्या कर दी। खैबर पख्तूनख्वा प्रांत में टीकाकरण अभियान के लिए सुरक्षा ड्यूटी पर तैनात कम से कम 11 पुलिसकर्मियों की इस साल मौत हो चुकी है। पुलिस अधिकारी साजिद खान ने बताया कि बंदूकधारियों ने लक्की मरवत जिले के वारगारी इलाके में काम कर रही एक टीम पर गोलीबारी की। हमलावरों में से एक की मौत हो गई, जबकि बाकी हमलावर भाग गए। अभी तक किसी ने हमले की जिम्मेदारी नहीं ली है। पाकिस्तान में पोलियो विरोधी अभियान अक्सर हिंसा से प्रभावित होते हैं। आतंकवादी टीकाकरण टीमों और उनकी सुरक्षा के लिए तैनात पुलिस को निशाना बनाते हैं और झूठा दावा करते हैं कि अभियान बच्चों को नसबंदी करने की पश्चिमी साजिश है। खैबर पख्तूनख्वा के 9 सबसे ज्यादा जोखिम वाले जिलों में सोमवार को पांच दिवसीय पोलियो विरोधी अभियान शुरू किया गया। हेल्थ वर्कर्स को पांच साल से कम उम्र वाले लगभग 3.28 मिलियन बच्चों को टीका लगाने का काम दिया गया। पोलियो बूथ और हेल्थ वर्कर्स की सुरक्षा में 26 हजार से अधिक पुलिसकर्मियों को तैनात किया गया। पाकिस्तान में पोलियो बूथ नियमित रूप से आतंकवादियों का निशाना बने हुए हैं और अक्सर बूथ पर हिंसा की खबरें आती रहती हैं। आतंकवादी टीकाकरण टीम और उनकी सुरक्षा में तैनात पुलिसकर्मियों को निशाना बनाते रहते हैं। आतंकवादी यह झूठा दावा करते हैं कि पोलियो अभियान बच्चों की नसबंदी करने के लिए एक पश्चिमी साजिश है। पाकिस्तान सरकार ने पोलियो के बहुत सारे मामले सामने आने के बाद पोलियो टीका लगाने के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान शुरू किया था। पाकिस्तान में पोलियो टीम पर हमलों के कारण पिछली सरकारों को कई बार पोलियो टीकाकरण अभियान को बीच में ही रोकना पड़ा है।

शिवसेना प्रमुख उद्धव ठाकरे ने उड़ाए भाजपा के होश इंडिया गठबंधन को लेकर बोल गए बड़ी बात

नेशनल डेस्क: लोकसभा चुनाव में 'इंडिया गठबंधन' के प्रदर्शन से उत्साहित शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख उद्धव ठाकरे ने केंद्र में अगली सरकार बनाने का दावा पेश करने की जरूरत पर जोर देते हुए कहा कि विपक्षी गठबंधन के नेता बुधवार को बैठक कर प्रधानमंत्री के चेहरे पर फैसला करेंगे। उन्होंने नतीजों और रुझानों के बाद यहां संवाददाता सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा कि भाजपा 272 सीट के साधारण बहुमत के आंकड़े से चूक जाएगी। ठाकरे ने कहा कि कांग्रेस और अन्य सहयोगी दलों के नेता बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और तेलुगु देशम पार्टी (तेदेपा) प्रमुख चंद्रबाबू नायडू के साथ गठबंधन में उनके शामिल होने की संभावना पर बातचीत कर रहे हैं। भाजपा नीत राजग ताजा रुझानों और परिणामों के अनुसार 290 से अधिक लोकसभा सीटें जीतते नजर आ रहा है, जो 543 सदस्यीय सदन में अगली सरकार बनाने के लिए पर्याप्त हैं। राजग में नीतीश कुमार नीत जद (यू) और चंद्रबाबू नायडू नीत तेदेपा भी हैं। ठाकरे ने आरोप लगाया कि संयुक्त आंध्र प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री नायडू और कुमार दोनों भाजपा से परेशान हैं। नतीजों और रुझानों के मुताबिक, इंडिया गठबंधन के 200 सीटों का आंकड़ा पार करने के बाद ठाकरे ने कहा, ''आम आदमी ने अपनी ताकत दिखा दी है।

विदेशी मीडिया की टिकी थी भारत के चुनाव पर निगाहें

नेशनल डेस्क: दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र भारत के लोकसभा चुनाव नतीजों पर न सिर्फ देश की ही नहीं बल्कि विदेशी मीडिया की निगाहें टिकी हुई हैं। देश के ही नहीं विदेश के मीडिया हाउस भी भारत के चुनाव को कवर कर रहे हैं। विदेशी मीडिया ने एन.डी.ए. को बहुमत मिलने पर अलग-अलग टिप्पणियां की हैं।

भाजपा के दावे साबित हुए गलत: द गार्जियन

ब्रिटिश अखबार द गार्जियन की वेबसाइट की रिपोर्ट ने लिखा है कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अपने नेतृत्व में हो रहे इस तीसरे चुनाव में जबरदस्त जीत के दावे कर रहे थे लेकिन इन रुझानों से पता चलता है कि उन्होंने वो शानदार जीत हासिल नहीं की है जिसकी कई लोगों ने भविष्यवाणी की थी।

न्यूयॉर्क टाइम्स ने बताया मोदी को रेफरेंडम

न्यूयॉर्क टाइम्स ने नतीजों को प्रधानमंत्री मोदी के 10 साल के कार्यकाल पर रेफरेंडम बताया है। टाइम्स के मुताबिक काफी हद तक नरेंद्र मोदी को तीसरे कार्यकाल में काम करने का मौका मिलेगा। रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत में नए बने विपक्षी गठबंधन ने मोदी की बंटवारे की राजनीति के खिलाफ वोट मांगा था। विपक्ष ने लोगों के मन में ये डर भरा था कि अगर भाजपा सत्ता में आई तो संविधान बदल देगी। न्यूयॉर्क टाइम्स ने लिखा कि एग्जिट पोल्स में भाजपा की बड़ी जीत का अनुमान लगाया गया था। बड़े बहुमत की खबरों से सोमवार को भारत के शेयर मार्केट ने रिकॉर्ड सेट किया। हालांकि मंगलवार सुबह कहानी बदल गई। जैसे ही नतीजे आने शुरू हुए तो एग्जिट पोल्स के उलट विपक्ष टक्कर देता दिखाई देने लगा।

कैंपेन में इस्लाम विरोधी भाषा का इस्तेमाल किया: सीएनएन

सीएनएन लिखता है कि भारत के सबसे पॉपुलर लेकिन विवादित नेता को तीसरे टर्म का इंतजार है। पीएम मोदी ने दुनिया के सबसे बड़े आबादी वाले देश में लगातार तीसरी बार चुनाव जीतने के लिए कैंपेन में इस्लाम विरोधी भाषा का इस्तेमाल किया।

बेरोजगारी और महंगाई के मुद्दे को छिपा नहीं सकते: अलजजीरा

अलजजीरा ने लिखा कि पीएम मोदी की भाजपा और एन.डी.ए. गठबंधन सभी दलों से आगे है। चुनौती देने के लिए बनाया गया गठबंधन इंडिया अलायंस उन्हें कड़ी टक्कर दी है। कांग्रेस ने उम्मीद से बेहतर प्रदर्शन किया है। नतीजों में कड़ा संदेश छिपा है, कि मोदी फिर से सत्ता में आने के बाद अपनी कितनी पीठ थपथपा लें, लेकिन वह बेरोजगारी और महंगाई के मुद्दे को छिपा नहीं सकते। मोदी को जरूरत है कि वह इन मुद्दों पर कुछ करें, अभी तक उन्होंने पुरानी सरकारों पर दोष मढ़ा है। लोग उनसे जवाब मांग रहे हैं।

पाकिस्तानी अखबार डॉन में छलका मुस्लिमों के लिए दर्द

पाकिस्तानी अखबार डॉन में जावेद नकवी ने लिखा कि चुनाव परिणाम यह तय करेगा कि भारत का लोकतंत्र में कितना यकीन है। उन्होंने आगे लिखा कि चुनाव प्रचार के दौरान पीएम मोदी ने मुसलमानों पर कई बार हमला किया। उन्होंने मुस्लिमों को घुसपैठिया बताया और 80 प्रतिशत हिंदुओं को डेमोग्राफिक डर दिखाया। उन्होंने दावा किया कि मुस्लिमों की नजर हिंदू महिलाओं के मंगलसूत्र और हिंदुओं के रोजगार पर है। उन्होंने कांग्रेस के मेनिफेस्टो को मुस्लिम लीग का डॉक्यूमेंट बताया।

भाजपा चुनाव जीतने के लिए मोदी ब्रांड पर निर्भर रहती है: फ्रांस 24

फ्रांस 24 ने लिखा कि 10 साल की सत्ता में नरेंद्र मोदी ने भारत की राजनीति के परिदृश्य को ही बदल दिया था। उनकी पॉपुलैरिटी ने उनकी पार्टी को पीछे छोड़ दिया। मोदी ने संसदीय चुनाव को राष्ट्रपति चुनाव जैसा बना दिया। नतीजा ये रहा कि भाजपा चुनाव जीतने के लिए मोदी ब्रांड पर निर्भर रहती है। बीबीसी ने लिखा कि नतीजे तय करेंगे कि नरेंद्र मोदी को तीसरा कार्यकाल मिलेगा या नहीं। वे लगातार सबसे ज्यादा वक्त तक भारत के प्रधानमंत्री चुने जाने वाले जवाहरलाल नेहरू के रिकॉर्ड को तोड़ पाएंगे या नहीं।

चुनाव रिजल्ट में भाजपा को झटके से पाकिस्तानी नेता खुश, फवाद चौधरी ने मोदी पर कसा तंज

इस्लामाबाद: भारत में लोकसभा चुनाव के नतीजों के शुरुआती रुझानों में भाजपा की सीटें काफी घट रही हैं। हालांकि रिजल्ट में एक बार फिर NDA की सरकार बनती नजर आ रही है लेकिन रुझानों में नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है लेकिन बहुमत के आंकड़े से वह दूर रह गई है। 2019 के मुकाबले भाजपा की सीटें घटने पर पाकिस्तान के नेता खुशी से झूम रहे हैं। इमरान खान की सरकार में मंत्री रहे फवाद चौधरी ने भाजपा को मिले झटके पर खुशी जताई है। फवाद ने कहा कि उनको उम्मीद थी कि भारत की जनता नरेंद्र मोदी और उनकी विचारधारा को खारिज करेगी। यही हुआ है, जो दावे भाजपा को लेकर किए गए थे, वो फेल हो रहे हैं। फवाद चौधरी ने अपने ट्वीट में कहा, भारतीय मतदाताओं पर हमेशा से विश्वास रहा है कि अतिवादियों और नफरत फैलाने वालों को खारिज कर देंगे। नतीजों में ये साफ दिख रहा है कि कैसे भाजपा के मोदी और राजनाथ सिंह भी मुश्किल से लोकसभा में पहुंच पा रहे हैं। वहीं कांग्रेस के राहुल गांधी अपनी दोनों सीटें जीत रहे हैं। फवाद चौधरी ने एक और ट्वीट में लिखा कि भारत में भी वही हुआ है जो पाकिस्तान के चुनाव में हुआ। पाकिस्तान की तरह भारत में मोदी गलत साबित हुए। फवाद चौधरी ने इससे पहले भारत चुनावों के बारे में आए एग्जिट पोल पर भी सवाल उठाते हुए, कहा था इसमें चीजों को बढ़ा चढ़ाकर दिखाया गया है। फवाद चौधरी पाकिस्तान के उन नेताओं में शामिल हैं, जिनकी ओर से भारत के चुनाव पर लगातार बयान दिए गए थे। उन्होंने बार बार भारत के लोगों से नरेंद्र मोदी को हराने की अपील की थी। इससे पहले पाकिस्तान के पूर्व सूचना मंत्री फवाद चौधरी ने चुनावों के बीच में कांग्रेस के राहुल गांधी को अच्छा नेता बताते हुए ट्वीट किया था। उनके इस ट्वीट की भारत के चुनावों में भी चर्चा रही। चौधरी ने भारतीय चुनावों पर बयानबाजी की वजह पूछने पर कहा था कि पाकिस्तानी राहुल को पीएम देखना चाहते हैं क्योंकि नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत बहुसंख्यकवाद पर बढ़ रहा है। ये भारत और उसके पड़ोसियों के लिए अच्छा नहीं है। ऐसे में हमें चाहिए कि राहुल गांधी, अरविंद केजरीवाल, ममता बनर्जी में से जो भी नरेंद्र मोदी को हराए, उसका हमें सपोर्ट करना चाहिए। फवाद ने कहा था, %मैं तो राहुल या मोदी किसी को भी निजी तौर पर नहीं जानता। मेरी समझ ये है कि जो भी भारत में कट्टरपंथ से लड़े, उसे हमारा समर्थन होना चाहिए।

स्वामी, प्रकाशक एवं मुद्रक श्रीमती ज्योती मिश्रा द्वारा कॉम्पेक प्रिंटर्स प्रा. लि. फ्री प्रेस हाउस 3/54, प्रेस कॉम्पलेक्स, ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 45ए गुप्ता चैम्बर पहली मंजिल जावरा कंपाउंड इंदौर, (म.प्र.) से प्रकाशित।
प्रधान सम्पादक : अशीष मिश्रा आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक : एमपी/एच/आइएन 2009/34385 फोन नं : 0731-4202569 फैक्स नं : 0731-4202569